बीस तीर्थंकर विधान

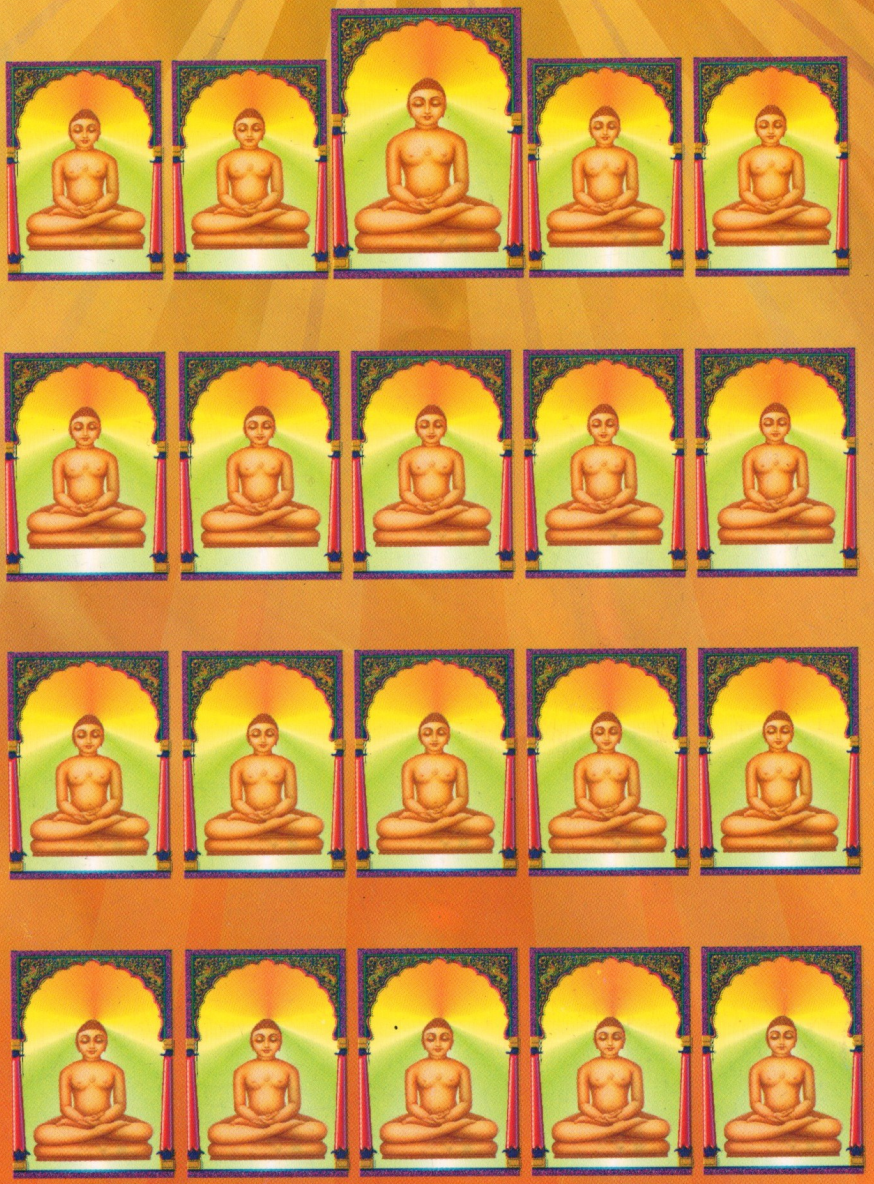

-राजमल पवैया

बीस तीर्थंकर विधान

रचयिता :

कविवर पण्डित राजमल पवैया

रचयिता :

पण्डित अभयकुमार जैन शास्त्री

एम.कॉम., जैनदर्शनाचार्य

प्रकाशक :

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन : 0141-2707458, 2705581

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

● **प्रथम सात संस्करण** : 17 हजार
(15 मई 1995 से अद्यतन)

अष्टम संस्करण : 1 हजार
(2 अक्टूबर, 2010)

योग : 18 हजार

मूल्य : **आठ रुपये**

मुद्रक :
प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड
बाईस गोदाम,
जयपुर

प्रकाशकीय

वीतरागी देव-गुरु-धर्म की भक्ति के प्रति पूजन-विधानों की श्रृंखला में पण्डित जमलजी 'पवैया' की नवीनतम कृति 'विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान' प्रकाशित करते ए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर गौरव एवं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

यद्यपि समाज में वर्तमान में जो बीस तीर्थंकर विधान प्रचलित है उसकी भाषा एवं ाली प्राचीन हिन्दी होने के कारण आधुनिक भाषा और शैली में विधान लिखने का विचार वैयाजी को आया, अतः उन्होंने स्वतः की प्रेरणा से इसकी रचना की है। भक्ति और पूजन ं सैद्धांतिक आधार एवं आध्यात्मिक रंग भरने की परम्परा कोई नई नहीं है। कवि संतलाल ारा रचित सिद्धचक्र विधान, पण्डित बृन्दावनदासजी द्वारा रचित चौबीस तीर्थंकर विधान ादि कृतियों में यह शैली सहज रूप से परिलक्षित होती है। आचार्य समन्तभद्र ने तो वयंभूस्तोत्र में जिनेन्द्र-भक्ति काव्य में जैन न्याय एवं सिद्धान्त के अनूठे रंग भरे हैं। ाधुनिक कवियों ने भी उन्हीं की प्रेरणा से पूजन और भक्ति और साहित्य सिद्धान्तों का ाधार लेकर आध्यात्मिक रंग भरने का सफल प्रयास किया है।

पवैयाजी ने भी अपनी रचनाओं में इसी शैली को अपनाया है, अतः तत्त्वरसिक समाज ं यह रचनाएँ काफी लोकप्रिय हुई है। पूजन भक्ति साहित्य में एक और नवीन कड़ी जोड़ने क उपलक्ष में वे बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं।

इन्द्रध्वज विधान, पंचपरमेष्ठी विधान एवं शान्ति विधान की भाँति इस कृति का म्पादन भी हमारे विशेष सहयोगी पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री जैनदर्शनाचार्य ने किया ै जिसमें उन्होंने उक्त तीनों कृतियों के सम्पादन से प्राप्त अनुभव का भरपूर लाभ उठाया है अतः वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन का दायित्व सदा की भाँति प्रकाशन विभाग के मैनेजर श्री अखिल बंसल ने सम्हाला है, नयनाभिराम कवर की कल्पना भी उन्हीं की है; उनके इस सहयोग के लिए संस्था उनकी आभारी है।

आशा है हमारे अन्य प्रकाशनों की भाँति यह प्रकाशन भी जिनेन्द्र भक्ति के रसिक समाज को शान्तिरस के परिपाक में सहायक सिद्ध होगा।

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल
महामंत्री
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

विषय सूची

क्र.	पूजन का नाम	पृष्ठ संख्या
१.	मंगलाचरण	१
२.	समुच्चय पूजन	२
३.	श्री सीमन्धर पूजन	६
४.	श्री युगमंदर पूजन	१०
५.	श्री बाहु पूजन	१३
६.	श्री सुबाहु जिन पूजन	१६
७.	श्री संयातक जिन पूजन	१९
८.	श्री स्वयं प्रभ जिन पूजन	२२
९.	श्री ऋषभानन जिन पूजन	२५
१०.	श्री अनंतवीर्य जिन पूजन	२९
११.	श्री सूर्यप्रभ जिन पूजन	३२
१२.	श्री विशालकीर्ति जिन पूजन	३५
१३.	श्री बज्रधर जिन पूजन	३८
१४.	श्री चन्द्रानन जिन पूजन	४१
१५.	श्री चन्द्रबाहु जिन पूजन	४४
१६.	श्री भुजंगप्रभ जिन पूजन	४७
१७.	श्री ईश्वर जिन पूजन	५०
१८.	श्री नेमि जिन पूजन	५३
१९.	श्री वीरसेन जिन पूजन	५६
२०.	श्री महाभद्र जिन पूजन	५९
२१.	श्री यशोधर जिन पूजन	६३
२२.	श्री अजितवीर्य पूजन	६६
२३.	समुच्चय जयमाला	६९
२४.	शांतिपाठ	७१
२५.	क्षमापना	७२

मंगलाचरण

(वीरछंद)

मध्यलोक में असंख्यात सागर अरु असंख्यात हैं द्वीप।
जम्बूद्वीप धातकी खंड अरु पुष्करार्ध यह ढाई द्वीप॥
ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं तीनों लोकों में अति ख्यात।
मेरु सुदर्शन विजय अचल मंदर विद्युन्माली विख्यात॥

एक-एक में हैं बत्तीस विदेह क्षेत्र अतिशय सुन्दर।
एक शतक अरु साठ क्षेत्र हैं चौथाकाल सदा सुखकर॥
पंच भरत अरु पंचैरावत कर्मभूमियाँ दस गिनकर।
एकसाथ हो सकते हैं तीर्थंकर एकशतक सत्तर॥

किन्तु न्यूनतम बीस तीर्थंकर विदेह में होते हैं।
सदा शाश्वत विद्यमान सर्वज्ञ जिनेश्वर होते हैं॥
एक मेरु के चार विदेहों में रहते तीर्थंकर चार।
बीस विदेहों में तीर्थंकर बीस सदा ही मंगलकार॥

कोटि पूर्व की आयुपूर्ण कर होते पूर्ण सिद्धभगवान।
तभी दूसरे इसी नाम के होते हैं अरहन्त महान॥
विहरमान श्री बीस जिनेश्वर भाव सहित गुणगान करूँ।
जो विदेह में विद्यमान है उनका जय जय गान करूँ॥

(दोहा)

विद्यमान जिन बीस प्रभु, गुण अनन्त की खान।
जिनवर सम निज जानकर, बनूँ शीघ्र भगवान॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

समुच्चय पूजन

(वीर छंद)

सीमंधर, युगमंदर, बाहु, सुबाहु, सुजात, स्वयंप्रभ देव।
ऋषभानन, अनंतवीर्य, सूर्यप्रभु विशाल कीर्ति, सुदेव॥
श्री बज्रधर, चन्द्रानन प्रभु चंद्रबाहु, भुजंगम, ईश।
जयति ईश्वर, जयति नेमिप्रभु, वीरसेन, महाभद्र, महीश॥

पूज्य यशोधर,अतिजवीर्य, जिनबीस जिनेश्वर परम महान।
विचरण करते हैं विदेह में शाश्वत तीर्थंकर भगवान॥
नहीं शक्ति जाने की स्वामी यहीं वन्दना करूँ प्रभो।
संस्तुति पूजन अर्चन करके शुद्ध भाव उर भरूँ विभो॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसम्बन्धि विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसम्बन्धि विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशति तीर्थंकराः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसम्बन्धि विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशति तीर्थंकराः अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट्।

(ताटंक)

निर्मल सरिता का प्रासुक जल लेकर चरणों में आऊँ।
जन्म जरादिक क्षय करने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥
सीमंधर युगमन्दर आदिक अजितवीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थंकर की पूजन कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन दाह निकंदन लेकर चरणों में आऊँ।
भव संताप ताप हरने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अखंडित उज्जवल तंदुल लेकर चरणों में आऊँ।
अनुपम अक्षय पद पाने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥
सीमंधर युगमंदर आदिक अजितवीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थंकर की पूजन कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्र शील के पुष्प मनोहर लेकर चरणों में आऊँ।
काम शत्रु का दर्प नशाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध नैवेद्य भाव उर लेकर चरणों में आऊँ।
क्षुधा रोग का मूल मिटाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग अंतरदीप प्रज्जवलित लेकर चरणों में आऊँ।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मप्रकृतियों का ईंधन अब लेकर चरणों में आऊँ।
ध्यान अग्नि में इसे जलाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल सरस विशुद्ध भाव फल लेकर चरणों में आऊँ।
परम मोक्षफल शिवसुख पाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यपुन्ज वैराग्य भाव का लेकर चरणों में आऊँ।
निज अनर्घ्य पदवी पाने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥ सीमंधर.

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विद्यमान जिन बीस को नमन करूँ हर्षाय ।
भक्ति भावना पूर्वक नाशूँ भव दुखदाय ॥

(वीरछन्द)

स्वगुण अनंत चतुष्टयधारी वीतराग को नमन करूँ ।
सकल सिद्धि मंगल के दाता पूर्ण अर्घ्य के सुमन धरूँ ॥
सीमंधर को वन्दन करके मैं अनादि मिथ्यात्व हरूँ ।
युगमंदर की पूजन करके समकित अंगीकार करूँ ॥

श्री बाहु को सुमिरण करके अविरति हर व्रत ग्रहण करूँ ।
श्री सुबाहु पद अर्चन करके तेरह विधि चारित्र धरूँ ॥
संयातक के चरण पूजकर पंच प्रमाद अभाव करूँ ।
देव स्वयंप्रभ को प्रणाम कर दुखमय सर्व विभाव हरूँ ॥

ऋषभानन की संस्तुति करके योगकषाय निवृत्ति करूँ ।
पूज्य वीर्य अनंत पद वन्दूँ पथ निर्ग्रन्थ प्रवृत्ति करूँ ॥
देव सूर्यप्रभ चरणाम्बुज दर्शन कर पाँचों बंध हरूँ ।
परम विशालकीर्ति की जय हो निज को पूर्ण अबंध करूँ ॥

श्री बज्रधर सर्व दोषहर सब संकल्प विकल्प हरूँ ।
चंद्रानन के चरण चित्त धर निर्विकल्पता प्राप्त करूँ ॥
चन्द्रबाहु को नमस्कार कर पाप पुण्य सब नाश करूँ ।
श्री भुजंग पद मस्तक धरकर निज चिद्रूप प्रकाश करूँ ॥

ईश्वर प्रभु की महिमा गाऊँ आत्मद्रव्य का भान करूँ ।
श्री नेमिप्रभु के चरणों में चिदानंद का ध्यान करूँ ॥
वीरसेन के पद पंकज में उर चंचलता दूर करूँ ।
महाभद्र की भव्य सुछवि लख कर्म घातिया क्रूर हरूँ ॥

नाथ यशोधर सुयश गानकर शुद्ध भावना हृदय धरूँ।
वीर्य अजित का ध्यान लगाकर गुणअनंत निज प्रगट करूँ॥
बीस जिनेश्वर समवशरण लख मोहमयी संसार हरूँ।
निज स्वभाव साधन के द्वारा शीघ्र भवार्णव पार करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विदेह के बीस जिनेश्वर की महिमा उर में धरते।
भावसहित प्रभु पूजन करते मोक्षलक्ष्मी को वरते॥
विद्यमान विंशति जिन तीर्थंकर विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

परमेष्ठी-वन्दना

पंच परम परमेष्ठी देखे_____।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।
हो ऽ ऽ ऽ सम्यग्दर्शन होता है॥ टेक॥
दर्शज्ञानसुखवीर्य स्वरूपी गुण अनन्त के धारी हैं।
जग को मुक्ति मार्ग बताते निजचैतन्य विहारी हैं॥
मोक्षमार्ग के नेता देखे विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे।
हृदय हर्षित होता है_____॥ १॥
द्रव्यभावनोकर्म रहित जो सिद्धालय के वासी हैं।
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर-अमर अविनाशी हैं॥
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योग रहित निजयोगी देखे।
हृदय हर्षित होता है_____॥ २॥
साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं।
निजपर के हितकारी गुरुवर, देवधर्म परिचायक हैं॥
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे।
हृदय हर्षित होता है_____॥ ३॥
जिनवाणी को हृदयंगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं।
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानन्द में जीते हैं॥
द्रव्यभाव श्रुत धारी देखे, बीस-पाँच गुणधरी देखे।
हृदय हर्षित होता है_____॥ ४॥
निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी।
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी॥
चलते-फिरते सिद्धप्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे।
हृदय हर्षित होता है_____॥ ५॥

श्री सीमंधर जिन पूजन

(गीता)

जयति जय श्रेयांसनृप सुत सत्य देवी नंदनम् ।
चउ घाति कर्म विनष्ट कर्त्ता ज्ञानसूर्य निरंजनम् ॥
जय जय विदेहीनाथ जय जय धन्य प्रभु सीमंधरम् ।
सर्वज्ञ केवलज्ञानधारी जयति जिनतीर्थंकरम् ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पूर्वविदेहक्षेत्रविद्यमानतीर्थंकर श्री सीमंधर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पूर्वविदेहक्षेत्रविद्यमानतीर्थंकर श्री सीमंधर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पूर्वविदेहक्षेत्रेविद्यमानतीर्थंकर श्री सीमंधर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(अवतार)

यह जन्म मरण का रोग हे प्रभु नाश करूँ ।
दो समरस निर्मल नीर आत्मप्रकाश करूँ ॥
शाश्वत जिनवर अरहंत सीमंधर स्वामी ।
सर्वज्ञ देव भगवंत प्रभु अंतर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन हरता तन ताप तुम भवताप हरो ।
निज सम शीतल हे नाथ मुझको आप करो ॥ शाश्वत. ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस भव समुद्र से नाथ मुझको पार करो ।
अक्षय पद दे जिनराज अब उद्धार करो ॥ शाश्वत. ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंदर्प दर्प हो चूर शील स्वभाव जगे ।
भव सागर के उस पार मेरी नाव लगे ॥ शाश्वत. ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह क्षुधा ज्वाल विकराल हे प्रभु शान्त करो।
चरु चरण चढ़ाऊँ देव मिथ्या भ्रान्ति हरो॥
शास्वत जिनवर अरहन्त सीमंधर स्वामी।
सर्वज्ञ देव भगवन्त प्रभु अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद मोह कुटिल विष रूप छाया अंधियारा।
दो सम्यक् ज्ञान प्रकाश फैले उजियारा॥ शाश्वत॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति विनष्ट हे प्रभु अब कर दो।
मैं धूप चढ़ाऊँ नाथ भव बाधा हर दो॥ शाश्वत.॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चरण चढ़ाऊँ नाथ फल निर्वाण मिले।
अंतर में केवलज्ञान सूर्य महान खिले॥ शाश्वत.॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक अनर्घ्य पद प्राप्त हो न मुझे सत्वर।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ नित्य चरणों में जिनवर॥ शाश्वत.॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सीमंधर प्रभु के चरण चित् सिंहासन धार।
शास्वत ध्रुव चैतन्य को ध्याऊँ बारम्बार॥

(वीरछंद)

शाश्वत विद्यमान तीर्थंकर सीमंधर प्रभु दया निधान।
दे उपदेश सभी जीवों को करते आप सदा कल्याण॥
कोटि पूर्व की आयु पाँचसौ धनुष स्वर्ण सम काया है।
सकल ज्ञेय ज्ञायक होकर भी निजस्वरूप ही भाया है॥

देव तुम्हारे दर्शन पाकर जागा है उर में उल्लास।
चरण - कमल की नाथ शरण दो सुनो प्रभो मेरा इतिहास॥
मैं अनादि से था निगोद में प्रतिपल जन्म मरण पाया।
अग्नि भूमि जल वायु वनस्पति कायक थावर तन पाया॥

दो इन्द्रिय त्रस हुआ भाग्य से पार न कष्टों का पाया।
जन्म तीन इन्द्रिय भी धारा दुःख का अंत नहीं आया॥
चौ इन्द्रिय धारी बनकर मैं विकलत्रय में भरमाया।
पंचेन्द्रिय पशु सैनी और असैनी हो बहु दुःख पाया॥

बड़े भाग्य से प्रबल पुण्य से फिर मानव पर्याय मिली।
मोह महामद के कारण ही नहीं ज्ञान की कली खिली॥
अशुभ पाप आस्रव के द्वारा नर्क आयु का बंध लहा।
नारकीय बन नरकों में रह उष्ण शीत दुःख द्वंद सहा॥

शुभ पुण्यास्रव के कारणमैं स्वर्ग लोक तक हो आया।
ग्रैवेयक तक गया किन्तु शाश्वत सुख चैन नहीं पाया॥
देख दूसरों के वैभव को आर्त रौद्र परिणाम किया।
देव आयु क्षय होने पर एकेन्द्रिय तक में जन्म लिया॥

इस प्रकार धर धर अनंत भव चारों गतियों में भटका।
तीव्र मोह मिथ्यात्व पाप के कारण इस जग में अटका॥
महा पुण्य के शुभ संयोग से फिर यह नरतन पाया है।
देव आपके चरणों को पाकर यह मन हर्षाया है॥

जन्म जन्म तक भक्ति तुम्हारी रहे हृदय में हे जिनदेव।
भेदज्ञान की ज्योति जलाऊँ पाऊँ सिद्धस्वपद स्वयमेव॥
समकित ज्योति जगे अंतर में हो जाऊँ मैं आप समान।
पूर्ण करो मेरी अभिलाषा हे प्रभु सीमंधर भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पूर्वविदेहक्षेत्रविद्यमानतीर्थंकर श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीमंधर के चरण कमल में भाव सहित शत शत वन्दन।
मोह भाव का नाश करूँ मैं मुक्ति वधू का अभिनन्दन॥
विद्यमान विशंति जिन तीर्थंकर विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

(तर्ज– करुणा सागर भगवान, भव पर लगा देना)

अशरीरी-सिद्ध भगवान, आदर्श तुम्हीं मेरे।
अविरुद्ध शुद्ध चिद् घन, उत्कर्ष तुम्हीं मेरे॥ टेक॥
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञान अगुरुलघु अवगाहन।
सूक्ष्मत्व वीर्य गुणखान, निर्बाधित सुखवेदन॥
हे गुण अनन्त के धाम, वन्दन अगणित मेरे॥ १॥
रागादि रहित निर्मल, जन्मादि रहित अविकल।
कुल गोत्र रहित निश्कुल, मायादि रहित निश्छल॥
रहते निज में निश्चल, निष्कर्म साध्य मेरे॥२॥
रागादि रहित उपयोग, ज्ञायक प्रतिभासी हो।
स्वाश्रित शाश्वत-सुख भोग, शुद्धात्म-विलासी हो॥
हे स्वयं सिद्ध भगवान, तुम साध्य बनो मेरे॥ ३॥
भविजन तुम-सम निज-रूप, ध्याकर तुम-सम होते।
चैतन्य पिण्ड शिव-भूप, होकर सब दुःख खोते॥
चैतन्यराज सुखखान, दुख दूर करो मेरे॥ ४॥

श्री युगमंदर जिन पूजन

(वीरछंद)

मेरु सुदर्शन पूर्व विदेह नदी सीता दक्षिण तट ओर।
विजयवती नगरी में जन्मे हुए हर्ष से इन्द्र विभोर॥
मात सुतारा पिता श्री दृढ़राज पुत्र तीर्थंकर नाथ।
युगमंदर लक्षण गज शोभित चरण झुकाऊँ सादर माथ॥
प्रभु पूजन से मुझे प्राप्त हो सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान।
वीतराग चारित्र प्रगट कर शिवपुर पथ पर करूँ प्रयाण॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वविदेहक्षेत्रस्थ श्री युगमंदरजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पूर्वविदेहक्षेत्रस्थ श्रीयुगमंदरजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री पूर्वविदेहक्षेत्रस्थ श्री युगमंदरजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चौपाई)

सीता सरि प्रासुक जल लाऊँ, जन्म जरा दुःख मरण मिटाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, मिथ्या मल को त्वरित हटाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री युगमंदरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव का चंदन लाऊँ, भव आताप सकल विघटाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, क्रोध कषाय पूर्ण विनशाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री युगमंदरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज भावों के अक्षत लाऊँ, शाश्वत अक्षय पद प्रगटाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, मान कषाय त्वरित विनशाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री युगमन्दरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शील भाव का चंदन लाऊँ, काम बाण पीड़ा विनशाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, मायामयी कषाय मिटाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री युगमंदरजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु संतोष भाव के लाऊँ, क्षुधा वेदना पूर्ण नशाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ लोभ कषाय पूर्ण विनशाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री युगमंदरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानदीप ज्योतिर्मय लाऊँ, मोह तिमिर को दूर भगाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, अनंतानुबंधी विनशाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री युगमन्दरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान की धूप चढ़ाऊँ, अष्ट कर्म सम्पूर्ण जलाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, अप्रत्याख्यानी विनशाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री युगमन्दरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय तरणी चढ़ जाऊँ, उत्तम महा मोक्षफल पाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, प्रत्याख्यानावरण हटाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री युगमंदरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य संजोकर लाऊँ, पद अनर्घ्य अनुपम प्रगटाऊँ।
युगमंदर को शीष झुकाऊँ, यह संज्वलन कषाय मिटाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री युगमन्दरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चहुँ गति भ्रमण विनाश का किया प्रभो व्याख्यान।
चउ कषाय अब क्षय करूँ युगमंदर भगवान॥

(सखी)

अरहंत महापद धारी, प्रभु सुनिए विनय हमारी।
निज शुद्ध स्वरूप बिसारा, पर का ही लिया सहारा॥
चहुँगति भ्रव भ्रमण बढ़ाया, सुख लेश नहीं प्रभु पाया।
नरकों में बहु दुःख पाए, पशु गति में कष्ट उठाए॥
सुरगति में बंध बढ़ाए, नरगति में पाप कमाए।
मुनि बन ग्रैवक पद पाया, पर दुःख का अंत न आया॥
उर मोह महातम छाया, प्रभु सम्यकज्ञान न पाया।
जब जब भी अवसर आया, निज शुद्ध स्वरूप भुलाया॥
अनगिनती नरभव पाए, प्रभु तुम बिन व्यर्थ गँवाए।
फिर इतर निगोद गया मैं, एकेन्द्रिय जीव भया मैं॥

बहु पुण्य उदय फिर आया, यह उत्तम नर भव पाया।
जिनकुल जिनश्रुत भी पाया, बहुभाग्य शरण में आया॥
अब सम्यक् बोधि मुझे दो, निधि स्वपर विवेक मुझे दो।
मैं निज से परिचय कर लूँ, भव बाधाएँ सब हर लूँ॥
बिनती सुनिए प्रभु मेरी, हे नाथ करो मत देरी।
मैं शरण आपकी आया, जिन दर्शन कर हर्षाया॥
भव संकट पूर्ण विनाशो, रवि केवलज्ञान प्रकाशो।
सम्यक्दर्शन प्रगटाऊँ, रागादि विकार मिटाऊँ॥
अविरति से दूर रहूँ मैं, भव कष्ट न और सहूँ मैं।
सम्पूर्ण कषाय विनाशूँ, अकषायी भाव विकासूँ॥
भोगों को भी विनशाऊँ, भगवंत सिद्ध पद पाऊँ।
जय जय जिनपति जिन स्वामी, जय जिन प्रभु अंतर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ युगमंदरजिनेन्द्राय महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

नय प्रमाण से वस्तु तत्व का जिनकी ध्वनि में है व्याख्यान।
युगमंदर के युगल चरण का करूँ सदा मंगलमय ध्यान॥
विद्यमान विंशति जिन तीर्थंकर विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

तू जाग रे चेतन प्राणी कर आतम की अगवानी।
जो आतम को लखते हैं उनकी है अमर कहानी॥ टेक॥
है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक जिसमें हैं ज्ञेय झलकते।
यह झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहिं ज्ञेय महकते॥
मैं दर्शन-ज्ञान स्वरूपी मेरी चैतन्य निशानी॥ १॥
अब समकित सावन आया, चिन्मय आनन्द बरसता।
भीगा है कण-कण मेरा, हो गई अखण्ड सरसता॥
समकित की मधु चितवन में झलकी है मुक्ति निशानी॥ २॥
ये शास्वत भव्य जिनालय, हैं शान्ति बरसती इनमें।
मानों आया सिद्धालय, मेरी बस्ती हो उसमें॥
मैं हूँ शिवपुर का वासी भव-भव की खतम कहानी॥ ३॥

श्री बाहु जिन पूजन

(वीरछंद)

मेरु सुदर्शन अपर विदेह नदी सीतोदा दक्षिण ओर।
नगर सुसीमा में जन्मे प्रभु जय ध्वनि शब्द हुए घनघोर॥
विजया माता पिता श्री सुग्रीव चरण में मृग लक्षण।
बाहु जिनेश्वर के चरणों को इन्द्रादिक करते वन्दन॥
मैं भी भक्ति भाव से पूजूँ प्राप्त करूँ सम्यक् दर्शन।
स्व पर भेद विज्ञान जगा उर मुक्ति प्राप्ति का करूँ यतन॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पश्चिमविदेहक्षेत्रस्थ श्री बाहुजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पश्चिमविदेहक्षेत्रस्थ श्री बाहुजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि पश्चिमविदेहक्षेत्रस्थ श्री बाहुजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(दोहा)

सीतोदा का नीर शुभ चरण चढ़ाऊँ नाथ।
त्रिविध व्याधियाँ नाश कर मैं भी बनूँ सनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन भेंट कर हर्षाऊँ मैं आज।
भव आताप विनाश कर पाऊँ पूर्ण स्वराज॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परमभाव अक्षत चढ़ा करूँ स्वयं का ध्यान।
अक्षय पद की प्राप्ति कर पाऊँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत के पुष्प ला बन जाऊँ अरहंत।
काम वेदना नाश कर पद पाऊँ भगवंत॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग के नाश हित लाया हूँ नैवेद्य।
आप कृपा से जान लूँ निज शुद्धात्म अभेद्य॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह भ्रान्ति से हो दुःखी भटक रहा संसार।
ज्ञान ज्योति की दीप्ति से पाऊँ ज्ञान अपार॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान धूप की शक्ति से ध्याऊँ निज ध्रुवधाम।
अष्टकर्म सब नष्ट कर पाऊँ पूर्ण विराम॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

परम मोक्षफल प्राप्ति में पुण्य भाव असहाय।
शुद्ध भाव की शक्ति से पाऊँ पद सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

परभावों का अर्घ्य ले भ्रमा सकल संसार।
शुद्ध भाव से प्राप्त हो पद अनर्घ्य अविकार॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

वन्दूँ बाहु जिनेश को मन वच काय संवार।
अष्ट द्रव्य से पूज कर हो जाऊँ भव पार॥

जयमाला

(दोहा)

बाहु जिनेश्वर चरण में वन्दन बारम्बार।
समकित से शिव गमन तक पाऊँ सौख्य अपार॥

(वीरछंद)

बाहु जिनेश्वर के चरणों में शीष झुकाऊँ बारम्बार।
दिव्य ध्वनि सुनकर हर्षाऊँ पाऊँ भेदज्ञान सुखकार॥
अष्ट अंग युत सम्यक्दर्शन पाऊँ सुदृढ़ नाथ इस बार।
स्व-पर विवेक हृदय में धारूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान अपार॥

हृदय स्वरूपाचरण सजाकर लूँ सम्यक् चारित्र महान।
मोक्षमार्ग पर चलूँ निरन्तर पाऊँ निज रत्नत्रय यान॥
सकल-देश संयम उर धारूँ अविरति पूर्ण करूँ मैं क्षार।
छठे सातवें झूला झूलूँ मुनि निर्ग्रन्थ बनूँ अविकार॥
अष्टम गुणस्थान चढ़ जाऊँ क्षायिक श्रेणी हो शिवकार।
मोह क्षीण द्वादशम प्राप्त कर पाऊँ केवलज्ञान अपार॥
निज अरहंत दशा प्रगटाऊँ हो सर्वज्ञ आप्त हितकार।
युगपत दर्पणवत् झलके त्रैलोक्य ज्ञान में अपरम्पार॥
आयु पूर्ण होने का अवसर आए तो हो योग निरोध।
एक समय में जा पहुँचूँ लोकाग्र शिखर हो पूरा बोध॥
ऐसी शक्ति प्रगट करने को आया आज आपके द्वार।
सम्यक् बोधि प्रदान करो प्रभु हो जाऊँ भवदधि के पार॥

ॐ *ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ बाहुजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

बाहु जिनेश्वर जिन परमेश्वर तीर्थेश्वर को सतत् परिणाम।
परिणामों से दृष्टि हटाकर ध्याऊँ शास्वत निज ध्रुवधाम॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग, कि हम आए पूजन को।
पूजन को प्रभु दर्शन को, पावन प्रभु-पद पर्शन को॥ टेक॥
जिनवर की अर्न्तमुख मुद्रा आतम दर्श कराती।
मोह महामल प्रक्षालन कर शुद्ध स्वरूप दिखाती॥ १॥
भव्य अकृत्रिम चैत्यालय की जग में शोभा भारी।
मंगल ध्वज ले सुरपति आए शोभा जिसकी न्यारी॥ २॥
अनेकान्तमय वस्तु समझ जिन शासन ध्वज लहरावें।
स्याद्वाद शैली से प्रभुवर मुक्ति मार्ग समझावें॥ ३॥

श्री सुबाहु जिन पूजन

(ताटंक)

मेरु सुदर्शन अपरविदेह नदी सीतोदा तट उत्तर।
नगर अयोध्या भव्यपुरी में जन्मे स्वामी तीर्थंकर॥
मात सुनंदा नृप निशढिल के नंदन श्री सुबाहु स्वामी।
कपि लक्षण चरणों में शोभित विहरमान त्रिभुवन नामी॥
भावसहित पूजन करता हूँ हृदय विराजित करूँ प्रभो।
रत्नत्रय की नौका चढ़ संसार महोदधि तरूँ विभो॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि अपरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसुबाहुजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपमध्ये सुदर्शनमेरुसम्बन्धि अपरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसुबाहुजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपमध्ये सुदर्शनमेरुसम्बन्धि अपरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसुबाहुजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चान्द्रायण)

शुद्ध भाव जल चरण चढ़ाऊँ हे जिनेश।
जन्म मरण दुःखदायी नाशूँ हे महेश॥
श्री सुबाहु के चरण जजूँ हर्षाय के।
ध्याऊँ सहज स्वभाव प्रभो गुण गाय के॥

ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव चंदन लाया हूँ हे जिनेश।
चहुँगतिमय भव ताप नशाऊँ हे महेश॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव अक्षत अर्पित हैं हे जिनेश।
अक्षय पद प्रगटाऊँ अब तो हे महेश॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंतमय पुष्प प्रदाता हे जिनेश।
कामबाण विध्वंस करूँ अब हे महेश॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धभाव नैवेद्य चढ़ाऊँ हे जिनेश।
क्षुधा रोग की पीड़ा मेटो हे महेश ॥ श्री. ॥
ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धभाव के दीप प्रज्ज्वलित हों जिनेश।
मिथ्या मोह तिमिर नाशो मेरा महेश ॥ श्री. ॥
ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध धर्ममय धूप चढ़ाऊँ हे जिनेश।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ मैं हे महेश ॥ श्री. ॥
ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल में स्वर्गों के सुख पाए जिनेश।
शुद्धभाव फल मोक्ष प्राप्त हो हे महेश ॥ श्री. ॥
ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव के अर्घ्य सजाऊँ हे जिनेश।
आत्मध्यान से हो अनर्घ्य पद हे महेश ॥ श्री. ॥
ॐ ह्रीं श्री सुबाहुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विहरमान जिन के चरण भाव सहित उर धार।
मन वच तन जो पूजते हो जाते भव पार ॥

(भुजंग प्रयात)

नमो देवदेवं सुबाहु जिनेशं, महामोहनाशक महा विभु महेशं।
नमो नाथ सर्वज्ञ त्रैलोक्य ज्ञाता, नमो तत्व मर्मज्ञ जग में विख्याता ॥
नमो देव अर्हंत कर्मारि नाशक, नमो देव भगवंत शिव सुख प्रकाशक ॥
तुम्हें देख प्रभु मोह मिथ्यात्व भागा, अनंतानुबंधी कषायों को त्यागा ॥
मिटे प्रत्याख्यानावरणी सदा को, अनादि की अविरति भगे सर्वदा को ॥
सकल देश संयम पले शक्तिशाली, क्षपकश्रेणि मांडूँ प्रभो मैं निराली ॥

त्वरित संज्वलन का सबल तेज हरलूँ, गुणस्थान तेरहवाँ मैं प्राप्त करलूँ ॥
प्रभो फिर अयोगी गुणस्थान पाऊँ, महामोक्ष जा मैं परम सौख्य लाऊँ ॥
यही प्रार्थना है सुनो नाथ मेरी, उबारो जगत से करो अब न देरी ॥
चरण आज पूजे हैं मैंने तुम्हारे, खड़ा हूँ प्रभो आज भव के किनारे ॥
सुबाहु जिनेश्वर मुझे पार करदो, सहज शुद्ध सम्यक्त्व की भोर कर दो ॥
कृपाकांक्षी हूँ कृपा कोर कर दो, भ्रमण चारगति का प्रभो नाश कर दो ॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसुबाहुजिनेन्द्राय महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वीरछंद)

श्री सुबाहु को वन्दन करके पाऊँ स्वपर भेद विज्ञान ।
निज स्वभाव का आश्रय लेकर बन जाऊँ अरहन्त महान ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

भजन

आओ रे आओ रे ज्ञानानन्द की डगरिया
तुम आओ रे आओ, गुण गाओ रे गाओ
चेतन रसिया आनन्द रसिया ॥ टेक ॥
बड़ा अचम्भा होता है, क्यों अपने से अनजान रे ।
पर्यायों के पार देख ले, आप स्वयं भगवान रे ॥ १ ॥
दर्शन-ज्ञान स्वभाव में, नहीं ज्ञेय का लेश रे ।
निज में निज को जानकर तजो ज्ञेय का वेश रे ॥ २ ॥
मैं ज्ञायक मैं ज्ञान हूँ, मैं ध्याता मैं ध्येय रे ।
ध्यान ध्येय में लीन हो, निज ही निज का ज्ञेय है ॥ ३ ॥

श्री संयातक जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

विजयमेरु पूरब विदेह में सीता सरिता उत्तर ओर।
अलकापुरी नगर में जन्मे भव्यों ने पाई शिव भोर॥
देवसेन नृप मात देवसेना के नन्दन त्रिभुवन नाथ।
संयातक प्रभु रविलक्षण पग पाऊँ आप चरण का साथ॥
विनयपूर्वक पूजन करके निज स्वरूप की करूँ संभाल।
निज शुद्धात्मदेव पहिचानूँ जो है सिद्ध समान त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुसम्बन्धिपूर्वधातकीखंड पूर्वविदेहक्षेत्र श्रीसंयातकजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर।

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुसम्बन्धिपूर्वधातकीखंड पूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीसंयातकजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकीखंडविजयमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीसंयातकजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चौपाई-ऑचलीबद्ध)

क्षमाभाव जल उत्तम लाय, क्रोध कषाय तुरंत नशाय।
परमगुरु हो, जयजिनदेव परमगुरु हो॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय॥
परमगुरु हो, जयजिनदेव परमगुरु हो॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव चंदन उर लाय, भव संसृति पूरी मिट जाय। परमगुरु हो.॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय॥ परमगुरु हो.॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव के अक्षत लाय, निज अपूर्व अक्षय पद दाय। परमगुरु हो.॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय॥ परमगुरु हो.॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव के पुष्प चढ़ाय, काम केतु का दर्प नशाय।
परमगुरु हो, जयजिनदेव परमगुरु हो ॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय।
परमगुरु हो, जयजिनदेव परमगुरु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव नैवेद्य सजाय, वेदनीय पीड़ा विनशाय। परमगुरु हो. ॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय। परमगुरु हो ॥.

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव के दीप जलाय, सब मोहान्धकार उड़ जाय। परमगुरु हो. ॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय। परमगुरु हो. ॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव की धूप बनाय, कर्मशक्ति विध्वंस कराय। परमगुरु हो. ॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय। परमगुरु हो. ॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव फल उत्तम लाय, महा मोक्षफल को प्रगटाय। परमगुरु हो. ॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय। परमगुरु हो. ॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव का अर्घ्य अनूप, पाऊँ पद अनर्घ्य शिवरूप। परमगुरु हो. ॥
संयातक प्रभु को नित ध्याय, पद अनुपम पाऊँ सुखदाय। परमगुरु हो. ॥

ॐ ह्रीं श्री संयातकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

महिमा श्री जिनराज की सुर नर मुनि सब गाँय।
निज महिमा को जानकर स्वयं सिद्ध बन जाँय ॥

(मोक्तिकदाम)

श्री संयातक प्रभु अरहंत, जिनेश्वर देव परम भगवंत।
जयति तीर्थंकर देव महान, नमो सर्वज्ञ जिनेन्द्र प्रधान ॥

तुम्हीं हो परम ब्रह्म जिनराज, तुम्हीं हो कारण शिवसुख काज।
तुम्हीं हो नाथ गुणाकर पूर्ण, तुम्हीं ज्ञाता दृष्टा आपूर्ण॥

तुम्हीं होअजरअमर अविनाश, तुम्हीं रवि केवलज्ञान प्रकाश।
अनंत चतुष्टय धारी देव, सुदर्शन बल सुख ज्ञान अमेव॥

विभावों की सेना कर क्षार, प्रगट कर आत्म स्वभाव अपार।
हरे चारों घातिया प्रधान, लिया परमात्म स्वरूप महान॥

अनंतानंत स्वगुण आपूर्ण, किये मोहादि कर्म सब चूर्ण।
तुम्हें देखा मैंने भगवान, हुआ पुण्यों का उदय महान॥

मिला अब नाथ तत्व उपदेश, मिला अब दिव्य ध्वनि संदेश।
सभी हैं जग में सिद्ध समान, सभी जीवों को देते ज्ञान॥

मात्र है मूल जीव की भूल, इसी से मिला न भव का कूल।
नहीं चाहूँ पुण्यों की धूल, नहीं चाहूँ मैं राग दुकूल॥

मुझे दो अनुभव रस की सिद्धि, मुझे दो आत्मज्ञान की ऋद्धि।
महापरमेश्वर जिनवर आप, मिटा दो रागों का संताप॥

यही वर दो अब हे जिनराज, सफल हों मेरे सारे काज।
सुनो संयातक नाथ प्रसिद्ध, बनूँ मैं निज अनुभव से सिद्ध॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसंयातकजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

संयातक प्रभु के पद पंकज मन वच तन से पूँजें आज।
परम पारिणामिक स्वभावमय निज दर्शन पाए जिनराज॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर हर्षाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री स्वयंप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

विजय मेरु पूरब विदेह सीता सरिता दक्षिण तट पर।
पुरी मंगला जन्मोत्सव कर हर्षे इन्द्रादिक सुर नर॥
माँ सुमंगला मित्रभूत नंदन चरणों में कपि लक्षण।
नाथ स्वयंप्रभ जिन तीर्थंकर हरे घातिया के बंधन॥
विमल भावना जगा हृदय में करता हूँ सादर पूजन।
चार कषायों का अभाव कर पाऊँ मैं कैवल्य गगन॥

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुसम्बन्धिपूर्वधातकीखंडपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीस्वयंप्रभजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुसम्बन्धिपूर्वधातकीखंडपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीस्वयंप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुसम्बन्धिपूर्वधातकीखंड पूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीस्वयंप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(गीता)

नीर प्रासुक मैं चढ़ाऊँ नाथ मार्दव भाव से।
स्वयं जन्म मरण मिटाऊँ बचूँ नाथ विभाव से॥
स्वयंप्रभ जिनराज के मैं चरण पूजूँ भाव से।
स्वयं सिद्ध स्वरूप ध्याऊँ जुड़ूँ शुद्ध स्वभाव से॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल चंदन मैं चढ़ाऊँ नाथ मार्दव भाव से।
स्वयं भव आताप नाशूँ सहज शुद्ध स्वभाव से॥ स्वयंप्रभ.॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अक्षत मैं चढ़ाऊँ नाथ मार्दव भाव से।
पद अखंड अपूर्व पाऊँ स्वयं आत्म स्वभाव से॥ स्वयंप्रभ.॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प पावन मैं चढ़ाऊँ नाथ मार्दव भाव से।
स्वयं चिर कामाग्नि नाशूँ महाशील स्वभाव से॥
स्वयंप्रभ जिनराज के मैं चरण पूजूँ भाव से।
स्वयं सिद्ध स्वरूप ध्याऊँ जुड़ूँ शुद्ध स्वभाव से॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वरुचिमय नैवेद्य लाऊँ प्रभो मार्दव भाव से।
मैं स्वयं जठराग्नि नाशूँ परम तृप्त स्वभाव से॥ स्वयंप्रभ.॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान के दीपक जलाऊँ नाथ मार्दव भाव से।
स्वयं ही अज्ञान नाशूँ शुद्ध ज्ञान स्वभाव से॥ स्वयंप्रभ.॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान धूप महान लाऊँ प्रभो मार्दव भाव से।
कर्म अरि सारे नशाऊँ स्वयं शुद्ध स्वभाव से॥ स्वयंप्रभ.॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वसंनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पतरु के फल चढ़ाऊँ नाथ मार्दव भाव से।
स्वयं शिवफल सहज पाऊँ परम पंचम भाव से॥ स्वयंप्रभ.॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुपावन अर्घ्य लाऊँ प्रभो मार्दव भाव से।
पद अनर्घ्य स्वयं सजाऊँ पारिणामिक भाव से॥ स्वयंप्रभ॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

स्वयं शुद्ध परमात्मा स्वयं बुद्ध जिनराज।
हुए स्वयं पुरुषार्थ से मुक्ति पुरी अधिराज॥

(चौपाई)

सकल सुरासुर ऋषि मुनि वंदित, पूर्ण अनंत चतुष्टय मंडित।
नाथ स्वयंप्रभ को है वन्दन, है उद्देश्य मिटे भव क्रन्दन॥

ज्ञानामृत रसपान करूँ मैं, मोह जनित अज्ञान हरूँ मैं।
स्वानुभूति का चंदन लाऊँ, चिन्मय अक्षत भेंट चढ़ाऊँ॥

निज स्वभाव के पुष्प बनाऊँ, परम विवेक सुचरु रुचि लाऊँ।
ज्ञानदीप की ज्योति जगाऊँ, अष्टकर्म की धूप जलाऊँ॥

महा मोक्ष फल ला सुख पाऊँ, पद अनर्घ्य अविकल प्रगटाऊँ।
इस प्रकार प्रभु पूजन करलूँ, भव संताप सकल अब हरलूँ॥

शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, मैं परमात्म परम चिद्रूपी।
ज्ञानगगन में उड़ूँ सदा ही, मुक्ति मार्ग पर बढ़ूँ सदा ही॥

परभावों से मुड़ूँ सदा ही, निज स्वभावसे जुड़ूँ सदा ही।
इस प्रकार मैं बढ़ूँ निरंतर, पाऊँ वीतराग पद सुखकर॥

कर्म विपाकों का दृष्टा बन, सर्व विभावों का ज्ञाता बन।
एकमात्र निज को ही निरखूँ, निज स्वभाव की गति को परखूँ॥

परम मोक्ष मंगल मैं पाऊँ, फिर न लौट इस भव में आऊँ।
यही विनय है अंतर्यामी, नाथ स्वयंप्रभ त्रिभुवन नामी॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ स्वयंप्रभजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं भाव से प्रेरित होकर स्वयं प्रभु के गुण गाऊँ।
अनुभवगम्य स्वरूप स्वयं का स्वयं शक्ति से प्रगटाऊँ॥
विद्यमान विशंति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री ऋषभानन जिनपूजन

स्थापना

(ताटंक)

विजयमेरु पश्चिम विदेह सीतोदा दक्षिण तट अनुपम।
नगर सुसीता जन्म भूमि है केहरि चिन्ह चरण उत्तम॥
कीर्तिराज नृप मातु वीर सेना के सुत जिन तीर्थंकर।
ऋषभानन प्रभु परमपूज्य सर्वेश जिनेश्वर अभ्यंकर॥
चरण पखारूँ नाथ आपके भव्य भावनाएँ भाऊँ।
दृढ़ वैराग्य जगा अन्तर में मोक्ष मार्ग पर आ जाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकीखंडविजयमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीऋषभाननजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकीखंडविजयमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीऋषभाननजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वधातकीखंडविजयमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीऋषभाननजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(अवतार)

जल चरण चढ़ाऊँ नाथ ऋजुता उर लाऊँ।
यह जन्म मरण भव रोग पूरा विनशाऊँ॥
हे ऋषभानन जिनराज ज्ञानस्वरूप वरूँ।
सर्वांश कुटिलता नाश आर्जव भाव धरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन कर भेंट ऋजुता उर लाऊँ।
भवताप नाश कर देव सिद्धस्वपद पाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय संसार तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत कर भेंट ऋजुता उर लाऊँ।
अक्षय पद पाकर देव सिद्धशिला पाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कर भेंट भावना पुष्प ऋजुता उर लाऊँ।
पीड़ा अनंग हर देव शील स्वगुण पाऊँ॥
हे ऋषभानन जिनराज ज्ञानस्वरूप वरूँ।
सर्वांश कुटिलता नाश आर्जव भाव धरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम नैवेद्य चढ़ाय ऋजुता उर लाऊँ।
हर क्षुधा रोग सम्पूर्ण तृप्ति पूर्ण पाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले ज्ञान दीप की ज्योति ऋजुता उर लाऊँ।
मोहान्धकार कर नष्ट पूर्ण ज्ञान पाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले धूप स्व ध्यान अनूप ऋजुता उर लाऊँ।
कर कर्म शक्तियाँ क्षीण निज पद प्रगटाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मानुभूति फल लाय ऋजुता उर लाऊँ।
फल पूर्ण मोक्ष सुख पाय शिव पद प्रगटाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले ज्ञानानंदी अर्घ्य ऋजुता उर लाऊँ।
पाऊँ अनर्घ्य पद नाथ निज वैभव पाऊँ॥ हे.॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

ऋषभानन जिनराज का सुन उपदेश महान।
पाप-पुण्य परभाव का करूँ नाथ अवसान॥

(चान्द्रायण)

ऋषभानन को नमन करूँ हर्षाय के।
वीतराग जिन धर्म शरण को पाय के॥
पाप छोड़ आया हूँ प्रभुजी द्वार सब।
पुण्य छोड़ने का जागा सुविचार अब॥

दोनों हेय कुशील बंध मय जानकर।
वीतराग प्रभु की वाणी को मानकर॥
शुद्धभाव की शक्ति हृदय में अब जगा।
राग सर्वथा नाथ पूर्णतः दूँ भगा॥

पान्डुकंबला शिला विराजित कर तुम्हें।
क्षीरोदधि जल लाकर नह्वन किया तुम्हें॥
क्षीरोदधि प्रभु केश ग्रहण कर है सुखी।
लहरातीं उठतीं तरंग ऊर्ध्वोन्मुखी॥

धन्य-धन्य वे देव कलश जो धारते।
धन्य-धन्य वे इन्द्र कलश जो ढारते॥
प्रभु के जन्म समय की शोभा है महान।
पान्डुक वन में इन्द्र शची गाते सुगान॥

समवशरण की शोभा अपरम्पार है।
सौ योजन तक होता मंगलाचार है॥
अष्ट भूमियाँ शुचि प्राची हैं रत्नमय।
द्वादश सभा विशाल जुड़ी है हो अभय॥

सिंहासन पर अंतरीक्ष जिनदेव है।
प्रातिहार्य वसुमंगल द्रव्य स्वमेव है॥
दिव्यध्वनि खिरती सर्वांग महान है।
भविजन को होता तत्वों का ज्ञान है॥

परमभक्ति रत्नत्रय की जागे प्रभो।
कर्मोपद्रव दूर सकल भागे विभो॥
श्रुतकेवलि केवली वचन विश्वास हो।
फिर निजात्म का उन्नत क्रमिक विकास हो॥

आत्मतत्व अभ्यास अगर हो मास षट।
दर्श मोह सम्पूर्ण समूल करूँ विघट॥
प्रगटेगा अंतर्मुहूर्त में ज्ञान रवि।
दर्शन-बल-सुखमय प्रगटे अरहंत छवि॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ ऋषभाननजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

पुण्य पाप को एक जानकर वस्तु तत्व का ज्ञान करूँ।
अप्पा सो परमप्पा जानूँ ऋषभानन का ध्यान करूँ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

हे प्रभो ! चरणों में तेरे आ गये।
भावना अपनी का फल हम पा गये॥ टेक॥
वीतरागी हो तुम्हीं सर्वज्ञ हो।
सप्त तत्वों के तुम्हीं मर्मज्ञ हो॥
मुक्ति का मारग तुम्हीं से पा गये॥ १॥

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में।
किन्तु प्रभुवर लीन है निज ध्यान में॥
ध्यान में निज ज्ञान को हम पा गये॥ २॥

तुमने बताया जगत के सब आत्मा।
द्रव्य-दृष्टि से सदा परमात्मा॥
आज निज पद परमात्मा पद पा गये॥ ३॥

श्री अनंतवीर्य जिनपूजन

स्थापना

(ताटंक)

विजयमेरु पश्चिम विदेह में सीतोदा उत्तर पावन।
नगर अयोध्या जन्मभूमि है तीन लोक में मनभावन॥
मात मंगला मेघराज नृप पुत्र अनंतवीर्य जिनवर।
गज लक्षण चरणों में शोभित विद्यमान जिन तीर्थंकर॥
तुव चरणों की पूजन करके निज स्वरूप का ध्यान करूँ।
परभावों से विरहित होकर निर्मल केवलज्ञान वरूँ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंड श्रीविजयमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंड श्रीविजयमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंड श्रीविजयमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीअनंतवीर्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(सरसी)

(चाल- कहाँ गए चक्री जिन जीता....)

उत्तम शौच धर्म उर लाऊँ शुचिता प्राप्त करूँ।
बाह्यान्तर निर्ग्रन्थ दशा पा त्रय विधि ताप हरूँ॥
नाथ अनंतवीर्य को वन्दूँ पाप पुण्य हर्ता।
सकल विभाव विनाशक स्वामी महामोक्षकर्त्ता॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म चंदन से शीतलता पाऊँ।
राग आग सम्पूर्ण बुझाऊँ परम शान्ति लाऊँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म अक्षत ले जिन मुनि बन जाऊँ।
भव समुद्र को पार करूँ मैं अक्षय पद पाऊँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म के पावन सुमन हृदय धारूँ।
भाव शुभाशुभमय विकार सब पूरे निरवारूँ॥
नाथ अनंतवीर्य को वन्दूँ पाप पुण्य हर्ता।
सकल विभाव विनाशक स्वामी महामोक्षकर्त्ता॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म चरु लाऊँ पूर्ण तृप्ति पाऊँ।
पुण्य उदय के फल में रुचिकर फिर न उलझ जाऊँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म के दीपक ज्योतिर्मय लाऊँ।
वीतराग विज्ञान ज्योति से भ्रम तम विनशाऊँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म की उत्तम ध्यान धूप लाऊँ।
कर्म शत्रुओं का विनाश कर शिव सुख उपजाऊँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म फल लाऊँ योग विनाश करूँ।
परम मोक्ष मंगल को पाकर पूर्ण विकास करूँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म के अनुपम अर्घ्य बना लाऊँ।
अब सर्वोत्तम पद अनर्घ्य त्रैलोक्यजयी पाऊँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गुण अनन्त सागर प्रभो प्रगटा वीर्य अपार।
विद्यमान तीर्थेश जिन वन्दूँ बारम्बार॥

(चौपई)

मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान, मिथ्या चारित्र दुःख की खान।
मोह वशात भ्रमा संसार, पाए कष्ट अनंत अपार॥
कुगुरु कुमार्ग कुधर्म कुदेव, दुःख पाया इनकी कर सेव।
स्वयं भूल से पाए कष्ट, चिर मिथ्यात्व न हुआ विनष्ट॥

आज सुअवसर पाया नाथ, मिला आप चरणों का साथ।
अब मिथ्यात्व हुआ चकचूर, स्वपर विवेक जगा भरपूर॥
सम्यक् दर्शन मिला महान, पाया मैंने सम्यक् ज्ञान।
पाया है सम्यक् चारित्र, मिला स्वरूपाचरण पवित्र॥

पाया वीतराग विज्ञान, आत्मधर्म प्रगटा अमलान।
अब संयम की पाऊँ नाव, मुक्ति प्राप्ति का यही उपाव॥
अनुभवरस तरणी गंभीर, आया सिद्धपुरी के तीर।
काटूँ कर्मों की जंजीर, मिट जाए चहुँगति की पीर॥

मोह सर्वथा करके नाश, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।
ये आस्रव के बंधन नेष्ठ, क्षय कर पाऊँ चिन्मय श्रेष्ठ॥
ऐसा जीवन पाऊँ नाथ, निकट आपके रहूँ सुनाथ।
तुम्हें सदैव जपूँ दिनरात, जागा है सम्यक्त्व प्रभात॥

गुरुप्रसाद से जागे शक्ति, निश्चय रत्नत्रय की भक्ति।
परभावों का करूँ अभाव, प्रगटाऊँ निज शुद्धस्वभाव॥
पाऊँ सिद्ध शिला का वास, निश्चित आऊँ प्रभु के पास।
नाथ अनंतवीर्य जिनराज, विनय सुनो मेरी महाराज॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ अनंतवीर्यजिनेन्द्राय महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछंद)

शुक्ल ध्यान की श्रेणी चढ़कर नाशे कर्म घातिया चार।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुखमय प्रभु का दर्शन सुखकार॥
विद्यमान विशंति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री सूर्यप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

अचल मेरु के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता सरि उत्तर।
विजयपुरी में जन्मे स्वामी सूर्य चिन्ह पग में सुन्दर॥
नागराज नृप माँ भद्रासुत नाथ सूर्य प्रभ तुम्हें नमन।
त्रिभुवन तिलक शीर्ष चूड़ामणि अंतरीक्ष प्रभु समवशरण॥
जल-फलादि वसु द्रव्य सजाकर करूँ आपकी मैं पूजन।
निर्मल सम्यक् दर्शन पाऊँ धन्य-धन्य हो यह जीवन॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीसूर्यप्रभजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीसूर्यप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीसूर्यप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(ताटंक)

प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाऊँ जन्मादिक त्रय दोष हरूँ।
विषय भोग वांछाएँ पूरी त्यागूँ सहज स्वभाव वरूँ॥
नाथ सूर्यप्रभ सर्व दोष हर भव भव में कल्याणमयी।
उत्तम सत्य असत्य विनाशक पाऊँ उर में ज्ञानमयी॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुवासित चंदन लाऊँ सकल जगत संताप हरूँ।
सर्व कषायों का अभाव करने को सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखंडित उज्ज्वल तंदुल जिन चरणों में भेंट करूँ।
राग द्वेष बंधन विनष्ट करने को सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु पुष्पों से अति उत्तम भाव पुष्प मैं भेंट करूँ।
काम वासना युत त्रिवेद हरने को सहज स्वभाव वरूँ॥
नाथ सूर्यप्रभ सर्व दोष हर भव भव में कल्याणमयी।
उत्तम सत्य असत्य विनाशक पाऊँ उर में ज्ञानमयी॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति रस मय चरु लाऊँ क्षुधा रोग का नाश करूँ।
गुण पर्याय सहित स्वद्रव्य को जानूँ सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप ज्योतिर्मय लाऊँ मोह तिमिर का नाश करूँ।
राग शुभाशुभ का अभाव करने को सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान की धूप सुपावन लाऊँ कर्मारि विनाश करूँ।
नित्य निरंजन पद पाने को निर्मल सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

परममोक्षफल प्रगटाने को यह संसार अभाव करूँ।
सादि अनंत परमसुख पाने निश्चय सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य की गरिमा पाऊँ दिव्य अर्घ्य प्रभु भेंट करूँ।
त्रिभुवन वन्दित पद पाने को ज्ञायक सहज स्वभाव वरूँ॥ नाथ.

ॐ ह्रीं श्री सूर्यप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

नाथ सूर्यप्रभ सुछवि लख पाऊँ शक्ति अपार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य घन जिन स्वरूप शिवकार॥

(गीतिका)

सूर्यप्रभ को नमन करके शीघ्र नाशूँ अब विभाव।
रागद्वेष अभाव करके आज पाऊँ शुद्ध भाव॥
रह तिर्यंच निगोद नरकों में किया जब पुण्यभाव।
मनुज हो अज्ञानवश मैंने किए कितने कुभाव॥

पुण्य से पा स्वर्ग सुख भूला चढ़ा फिर पाप नाव।
पंच इन्द्रिय विषय सुख रत हो किए बहु पाप भाव॥
इस प्रकार भ्रमण बढ़ाए जगी सुख की हृदय चाव।
भूल से फिर कर प्रमाद किया सदा खोटा उपाव॥
आज फिर अवसर मिला प्रभु मुक्ति पथ मुझको दिखाव।
शुष्क अंतर में प्रभो अब भाव समकित का जगाव॥
ज्ञान दर्शन चेतनामय स्वपथ पर मुझको लगाव।
लीन हूँ व्यवहार में अब शुद्ध निश्चय उर जगाव॥
भ्रान्तियाँ मेरी सदा को भ्रममयी मेरी भगाव।
दीप ज्योतिर्मय चिरंतन आप ही अब तो जलाव॥
जगा दो निज शक्ति मेरी कर्म की धूला उड़ाव।
मुक्ति पथ पर चलूँ अब तो रत्न रत्नत्रय जड़ाव॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूर्यप्रभजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीरछन्द

प्रभु कैवल्य सूर्य के स्वामी सूर्यप्रभ जिनराज महान।
जीवन मुक्त दशा प्रगटाऊँ आस्रव भाव करूँ अवसान॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री विशालकीर्ति जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

अचलमेरु पूरब विदेह में सीता सरि दक्षिण सुन्दर।
पुण्डरीकपुर जन्मस्थल है चंद्रचिन्ह युत श्री जिनवर॥
नृपति विजयपति विजया माता के सुपुत्र जिनतीर्थंकर।
नाथ विशालकीर्ति जिनस्वामी मोक्षमार्गपति अभ्यंकर॥
परमभक्ति से पूजन करता विषय वासनाओं को तज।
तुम समान मैं भी बन जाऊँ हे प्रभु नित स्वभाव को भज॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीविशालकीर्तिजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीविशालकीर्तिजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीविशालकीर्तिजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चौपाई आँचलीबद्ध)

उत्तम संयम जल उर लाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय।
महासुख हो देखे नाथ परम सुख को।
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय॥ महासुख.॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा
उत्तम संयम चंदन लाय, परम अहिंसा हृदय सजाय॥ महा.॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय॥ महा.॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम संयम अक्षत लाय, पद अक्षय अनुपम प्रगटाय॥ महा.॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय॥ महा.॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम संयम पुष्प चढ़ाय, पंच महाव्रत लूँ अपनाय॥ महा.॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय॥ महा.॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम चरु मन लाय, क्षुधा रोग अविलम्ब नशाय ॥ महा. ॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय ॥ महा. ॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
उत्तम संयम ज्योति जगाय, मोह तिमिर अज्ञान मिटाय । । महा. ॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय ॥ महा. ॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
उत्तम संयम धूप चढ़ाय, अष्टकर्म विध्वंस कराय । । महा. ॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय । । महा. ॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
उत्तम संयम शिवफलदाय, मोक्ष प्राप्ति का करूँ उपाय । । महा. ॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय । । महा. ॥
ॐ ह्रीं विशालकीर्तिजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
उत्तम संयम अर्घ्य बनाय, पद अनर्घ्य अद्‌भुत प्रगटाय ॥ महा. ॥
नाथ विशालकीर्ति गुण गाय, स्वपद प्राप्ति का करूँ उपाय । । महा. ॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आतम अनुभव की अहो जग में कीर्ति विशाल ।
समकित से शिवगमन तक अनुभव रस का काल ॥

(चौपाई)

वन्दन करूँ विशाल कीर्ति को, प्राप्त करूँ निज स्वानुभूति को ॥
पाऊँ समकित की विभूति को, फैलाऊँ अपनी सुकीर्ति को ॥
अनुभवगम्य स्वभाव त्रिकाली, अनुभव सिंधु स्ववैभवशाली ॥
इन्द्रियगम्य नहीं है अणु भर, निजस्वभाव अतिशय शिव सुन्दर ॥
दर्शन ज्ञान स्वरूप अरूपी, एक शुद्ध चैतन्य अनूपी ॥
इसकी महिमा वचन अगोचर, अनुभव भूत स्वयं के भीतर ॥

जो सर्वज्ञदेव ने जाना, अनुभव से मुनियों ने माना ॥
अनुभव से भव भार हटाया, अनुभव से शाश्वत सुख पाया ॥
दिव्यध्वनि असमर्थ कथन में, अनुभवरस है निज चिन्तन में ॥
इसे प्राप्त करने का साधन, एकमात्र निज अनुभव पावन ॥
निज अनुभव सर्वोत्कृष्ट है, हम सबको परमोत्कृष्ट है ॥
अनुभव ही भव पार लगाए, अनुभव मुक्ति भवन ले जाए ॥
मैं निज अनुभव प्राप्त करूँगा, परविभाव संपूर्ण हरूँगा ॥
अनुभव ही है मुक्ति प्रदाता, अनुभव सिद्ध स्वपद का दाता ॥
अनुभव कामधेनु चिन्तामणि, अनुभव कल्पवृक्ष फल गुण मणि ॥
अनुभव पारस मणि प्रधान है, अनुभव ही सब में महान है ॥
अनुभव शक्ति प्रदान करो प्रभु, अनुभव युक्ति सुदान करो प्रभु ॥
आत्म अनुभवन उपादेय है, बिन अनुभव चारित्र हेय है ॥
शुद्ध स्वानुभव परम श्रेष्ठ है, इसके बिन सब क्रिया नेष्ठ है ॥
ऐसा अनुभव प्रभु अब पाऊँ, नित्य निरंजन मैं हो जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ विशालकीर्तिजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक में व्याप रही है, जिनकी अद्भुत कीर्ति विशाल ।
प्रभु चरणों में वन्दन करके पाऊँ निज अनुभव का काल ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ ।
सहज शुद्ध चैतन्य राज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री बज्रधर जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

अचल मेरु पश्चिम विदेह सीतोदा सरिता दक्षिण भाग।
नगर सुसीमा जन्म लिया प्रभु देव देवियाँ गाते राग॥
सरस्वती माँ नृप पद्मार्थ सुपुत्र तीर्थंकर जिनराज।
नाथ बज्रधर शंख चिन्ह पग बन्दूँ त्रिभुवन के महाराज॥
प्रभु चरणों की पूजन का जागा है मेरे मन में भाव।
द्वादश तप परिपूर्ण धार कर प्रगटाऊँ निज शुद्ध स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखंड अचलमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीबज्रधरजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखंड अचलमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीबज्रधरजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखंड अचलमेरुसम्बन्धिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीबज्रधरजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(पंच चामर)

शक्ति अनुसार तप नीर शुद्ध लाइये।
जन्म मृत्यु जरा नाश मोक्ष सौख्य पाइये॥
बज्रधर जिनेन्द्र को नमन करूँ नमन करूँ।
भव समुद्र पार हेतु आत्मचिन्तवन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

छहप्रकार अंतरंग तप महान ध्याइये।
नाश संसार ताप पूर्ण शान्ति पाइये॥ बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्यतप छह प्रकार आचरण में लाइये।
गुण अनंत का समुद्र सिद्ध पद पाइये॥ बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पबृक्ष पुष्प की सुगंध को हटाइये।
पूर्ण इच्छानिरोध तपोगंध पाइये॥
बज्रधर जिनेन्द्र को नमन करूँ नमन करूँ।
भव समुद्र पार हेतु आत्मचिन्तवन. करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव नैवेद्यतप स्वयं शक्तिमान है।
क्षुधा वेदनीय कर्म होत अवसान है॥ बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय क्षुधरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकमात्र तपोदीप मोह क्षयकार है।
ज्ञान कैवल्य प्राप्ति का जगा विचार है॥ बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्लध्यान धूप तप अष्टकर्म नाशता।
कर्म निर्जरा की शक्ति पूर्णता प्रकाशता॥बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षपद प्राप्ति का यदि अखंड लक्ष हो।
ज्ञान चेतना महान सहज प्रत्यक्ष हो॥बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल त्रैलोक्य में पद अनर्घ्य है प्रसिद्ध।
इन्द्र तरसते सदैव धार तप बनूँ सिद्ध॥ बज्रधर॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(पद्धटिका)

हे नाथ बज्रधर जगज्जेष्ठ। स्वात्मानुभूतिमय सर्वश्रेष्ठ।
सर्वज्ञ तीर्थंकर महेष्ठ। जिन विद्यमान कैवल्य प्रेष्ठ॥

(मतसवैया)

अपने उत्कृष्ट तेज से शत सूर्यादिक तेज छुपा देते।
प्रभु देहकान्ति किरणावलि से सब दशों दिशा नहला देते॥

हैं एक सहस्र अष्ट लक्षण परमौदारिक तन अति पावन।
देवोपम अतिशय सहित देव शत इन्द्र झुकाते शीष चरण॥

जिनराज अलौकिक अतिशय की गाथा जागी मेरे भीतर।
अप्रतिबुद्ध हूँ फिर भी प्रभु मैं हुआ प्रभावित दर्शन कर॥

जिन दर्शन करते ही स्वामी प्रतिबुद्ध हो गया सहज आज।
सर्वोत्कृष्ट मंगल पाया देखा अपना चैतन्यराज॥

तुम मुझे तार दोगे निश्चित विश्वास हो गया मुझे आज।
हे तारणतरण महान देव हो गए सिद्ध प्रभु सभी काज॥

अब शेष नहीं संसार रहा अब शेष नहीं मिथ्यात्वभाव।
सम्यक्-दर्शन महान पाया पाया है मैंने निज स्वभाव॥

अपने स्वभाव का बल प्रगटा पाया है रत्नत्रय सुमान।
कैवल्य प्राप्तकर पाऊँगा अब मुक्तिलोक पावन महान॥

इसलिए नाथ पूजन की है इसलिए चढ़ाए अष्ट द्रव्य।
प्रभु मुझे पूर्ण विश्वास हुआ मैं तो हूँ स्वामी निकट भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री बज्रधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

द्वादश तप में सर्वश्रेष्ठ है स्वाध्याय अरु आतम ध्यान।
जिन्हें प्राप्त कर हुए वज्रधर स्वामी जिन अर्हन्त महान॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री चंद्रानन जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

अचलमेरु पश्चिम विदेह सीतोदा सरिता के उत्तर।
पुण्डरीकिणी नगर जन्म ले संयमपथ पाया तपधर॥
बाल्मीकि नृप पद्मावती सुमाता के नंदन स्वामी।
चंद्रानन प्रभु वृषभ चिन्हयुत महामहेश्वर अभिरामी॥
दर्शन ज्ञान वीर्य सुखधारी के चरणों में करूँ नमन।
विहरमान सर्वज्ञ जिनेश्वर की करता सविनय पूजन॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीचंद्राननजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीचंद्राननजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंड श्रीअचलमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीचंद्राननजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चौपाई)

उत्तम त्याग धर्म जल भारी, निश्चय पर विभाव मलहारी।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग सुवासित चंदन, करता सकल नष्ट भव क्रन्दन।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म के अक्षत, अक्षय पद का करता स्वागत।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म कुसुमांजलि, महाशील दाता विनयांजलि।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म चरु पावन, परम तृप्त चिन्मय उरभावन।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म के दीपक, मोह विनाशक ज्ञान प्रदीपक।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म धूप ले त्याग भाव की, द्युति हर लूँ पूरी विभाव की।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म फल लाऊँ, शुद्ध मोक्षफल शिवमय पाऊँ।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह राग रूप परित्याग कर, पद अनर्घ्य पाऊँ विराग धर।
चंद्रानन के चरण चित्त धर, हर्षाऊँ प्रभु की पूजन कर॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्राननजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चन्द्रानन प्रभु चरण का धारूँ उर में ध्यान।
स्व-पर भेद विज्ञान पा करूँ आत्म कल्याण॥

(पद्धटिका)

जय चंद्रानन जगपति सुनाम, शत शत वंदन शत शत प्रणाम।
प्रभु समवशरण शोभा अपार, वसु रत्नजड़ित प्राचीन सार॥
वसु भूमिरत्नस्वर्णाभ श्रेष्ठ, सुन्दर अशोक तरु पृष्ठ ज्येष्ठ।
शुभ श्वेत छत्रत्रय उच्च शीष, त्रिभुवन पति पद सूचक महीश॥

सुर ढोरें चौंसठ चमर यक्ष, भामंडल की शोभा समक्ष।
सिंहासन रत्नमयी विलोक, प्रभु अंतरीक्ष नभ अधर लोक॥
दुन्दुभि देवोपम सुप्रसिद्ध, सुर पुष्प वृष्टि होती प्रसिद्ध।
जय जय ध्वनि होती है महान, वसु मंगल द्रव्य प्रकाशमान॥

दश अतिशय जन्म समय महान, दश अतिशय केवलज्ञान जान।
चौदह देवोपम अतिप्रसिद्ध, हैं सारे अतिशय पुण्यविद्ध॥
शुभ चंवार छत्र ध्वज कलश जान, झारी ढोना पंखा विहान।
झलमल दर्पण की द्युति महान, जिन प्रभु सन्मुख शोभायमान॥
हैं द्वादश सभा महा विशाल, दर्पणवत जानत जग त्रिकाल।
सब भूत भविष्यत वर्तमान, झलके युगपत महिमा स्वज्ञान॥
अष्टादश दोष विहीन नाथ, चौंतीसों अतिशय चरण साथ।
दर्शन सुख वीर्य अनंतज्ञान, आपूर्ण चतुष्टय हैं महान॥
गुण छयालीस धारी महेश, शोभित अनंत गुणमय जिनेश।
दिव्यध्वनि पति शिव श्री गर्भ, भुवनेश्वर सार्व हिरण्य गर्भ॥
हे नाथ सुनो मेरी पुकार, भव दुःख समुद्र से करो पार।
हे सहस्राक्ष हे भास्वान, दृढ़व्रत त्रिकालदर्शी प्रधान॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ श्रीचंद्राननजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

चन्द्रानन के चरण चित्त धर निज चैतन्यचन्द्र निरखूँ।
चिदानन्द चित्चमत्कार चिन्मय की चितवन लख हरखूँ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री चंद्रबाहु जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

पुष्करार्ध पश्चिम सुरगिरि मंदर सुमेरु अनुपम पावन।
पूर्व विदेह सरित सीता उत्तर सु विनीता मन भावन॥
देवनन्दि नृप पिता रेणुका माता के सुत श्री जिनवर।
पद्मचिन्ह चरणों में शोभित चन्द्रबाहु जिन परमेश्वर॥
विनय भाव कुसुमांजलि चरणों में अर्पित करता सादर।
निज स्वरूप ऐश्वर्य प्राप्ति हित करता हूँ पूजन प्रभुवर॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीचंद्रबाहुजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीचंद्रबाहुजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीचंद्रबाहुजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(अवतार)

उत्तम आकिंचन धर्म, जल उर में धारूँ।
चौबीस परिग्रह त्याग मुनिव्रत स्वीकारूँ॥
हे चन्द्रबाहु भगवान तुमको नित ध्याऊँ।
चैतन्य चन्द्र का ध्यान कर शिवसुख पाऊँ॥

ॐ ह्री श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म, चंदन उर धारूँ।
मिथ्यात्व आदि संताप चौदह निरवारूँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय संसार तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म अक्षत उर धारूँ।
दश बाह्य परिग्रह जान अब अस्वीकारूँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म के उर पुष्प धरूँ।
दुर्धर कंदर्प प्रसिद्ध का अब दर्प हरूँ॥
हे चन्द्रबाहु भगवान तुमको नित ध्याऊँ।
चैतन्य चन्द्र का ध्यान कर शिव सुख पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म के चरु हृदय धरूँ।
संतोषामृत कर पान सर्व अतृप्ति हरूँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म के दीपक लाऊँ।
अज्ञान तिमिर का नाश रवि केवल पाऊँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धूप, भावों की लाऊँ।
वसु कर्म करूँ विध्वंस, सिद्ध स्वपद पाऊँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म निश्चय उर लाऊँ।
परिपूर्ण मोक्ष फल प्राप्ति का अवसर पाऊँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन धर्म का उर अर्घ्य धरूँ।
अनुपम अनर्घ्य पद पूर्ण शुद्ध स्वरूप वरूँ।। हे.॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चेतन चन्द्र सुबाहु द्वय दर्शन ज्ञान महान।
जिसके आश्रय से बने चन्द्रबाहु भगवान॥

(पंच चामर)

(चाल-पार्श्वनाथ देव सेव__)

पूर्ण आनंदकंद चंद्रबाहु जिनवरम्।
वीतराग वीत मोह वीत द्वेष भयहरम्॥

गगन चुम्बित शिखर स्वर्ण कलश मंदिरम्।
बिम्बनासाग्रदृष्टि परम पूज्य सुन्दरम्॥
देखते ही आपको तत्वंबोध हो गया।
मोह मिथ्यात्व पाप का निरोध हो गया॥
कषाय मंद जब हुई तो पुण्यबंध हो गया।
कषाय तीव्र जब हुई तो पाप बंध हो गया॥
पाप- पुण्य द्वंद में कुबंध अंध हो गया।
पाप पुण्य से विहीन तो अबंध हो गया॥
तत्वज्ञान के बिना कभी न आत्मज्ञान हो।
भेदज्ञान के बिना कभी न आत्मभान हो॥
ज्ञान श्रद्धान बिन जीव अंध जानिए।
स्वयं भूल से निगोद का प्रबंध मानिए॥
राग का महान जाल तोड़ के जो आएगा।
राग आग की जलन वही सहज मिटाएगा॥
राग हेय मानते ही सर्व बंध खो गया।
चित्स्वरूप चिदानंद सौख्यकंद हो गया॥
जाना निज समयसार कारण जिस जीव ने।
कार्य समयसार प्राप्त किया उसी जीव ने॥
पाप-पुण्य बंध कार्य द्वंद बंद हो प्रभो।
द्वार संसार का पूर्ण बंद हो प्रभो॥
आप आनंद लीन सत्य शिव सुन्दरम्।
नाथ अरहंत सर्वज्ञ मुक्ति सुख करम्॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रबाहुजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

चन्द्र बाहु के चरण चन्द्र लख जागा उर में स्वपर विवेक।
चेतन चन्द्र स्व-दर्शन पाये भागा मोह जन्य अविवेक॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री भुजंगप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

मंदरमेरु विदेह पूर्व में सीता सरिता उत्तर जान।
विजयानगरी जन्मे स्वामी किया आत्मा का कल्याण॥
पिता महाबल माता महिमा चंद्र चिन्ह पद में छविमान।
श्रीभुजंगप्रभ नाथ नमनकर पाऊँ मैं रत्नत्रय पान॥
शुद्ध भावना पूर्वक पूजन करके गाऊँ प्रभु के गीत।
जिनदर्शन से निजदर्शन कर दर्शन मोह अभी लूँ जीत॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीभुजंगप्रभजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीभुजंगप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीभुजंगप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चान्द्रायण)

(अडिल्ल)

उत्तम ब्रह्मचर्य जल श्रेष्ठ प्रधान है।
स्वयं सिद्ध ध्रुव ब्रह्म स्वरूप महान है॥
श्रीभुजंगप्रभ चरण विनय से पूज लूँ।
मोह भुजंग नष्ट कर समकित दूज लूँ॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य चंदन शिवकार है।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध स्वपद दातार है।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य अक्षत अविकार है।
दर्शन ज्ञानमयी अक्षय पद सार है।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य के पुष्प प्रसिद्ध हैं।
जो इनको धारें वे होते सिद्ध हैं॥
श्रीभुजंगप्रभ चरण विनय से पूज लूँ।
मोह भुजंग नष्ट कर समकित दूज लूँ॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य नैवेद्य अनूप है।
पूर्ण शुद्ध चेतन चिन्मय चिद्रूप है।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य के दीप प्रजालिए।
मोह तिमिर अज्ञान सर्वथा टालिए।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य की शुचिमय धूप लूँ।
अष्ट कर्म हारी निज शुद्ध स्वरूप लूँ।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य पद मुक्ति प्रदाय है।
सादि अनंतानंत काल सुखदाय है।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य का अर्घ्य बनाऊँगा।
ब्रह्मस्वरूपी पद अनर्घ्य प्रगटाऊँगा।। श्री भुजंग.॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंगप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्री भुजंगप्रभ शरण में पाऊँ ज्ञान प्रकाश।
भ्रम भावों का नाश कर भव का करूँ विनाश॥

(चौपाई)

प्रभु भुजंगप्रभ भवभयहारी, महापूज्य त्रिपुरारि मुरारी।
परम दिगंबर मुद्राधारी, यथाजात शिशुसम अविकारी॥
वस्त्राभूषण सभी त्यागकर, सहज निजांतर में विरागधर।
नमः सिद्ध कह मौन हुए प्रभु, आत्मध्यान तल्लीन हुए विभु॥

घातिकर्म का सर्वनाश कर, केवलज्ञान महाप्रकाश वर।
आप हुए सर्वज्ञ जिनेश्वर, तीर्थंकर अरहंत महेश्वर॥
इन्द्र सहस्त्रनाम जप हारे, नाम अनंत जिनेन्द्र तुम्हारे।
महासौख्य मंगल के दाता, त्रिभुवन को आनंद प्रदाता॥

खिरी दिव्यध्वनि जगकल्याणी, सुनी भव्य जीवों ने वाणी।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरितमय, मोक्षमार्ग है रत्नत्रयमय॥
निश्चय पंच महाव्रत धारी, पाता शिवपद मंगलकारी।
जो व्यवहार लक्ष्य बिन धरता, ग्रैवेयक जा नीचे गिरता॥

जब तक उर में मिथ्यादर्शन, शून्य सभी चारित्र प्रदर्शन।
पहिले जाता है मिथ्यातम, फिर जाती है अविरति क्रमक्रम॥
फिर प्रमाद जाता है पूरा, फिर कषाय होती हैं धूरा।
अंतिम समय योग जाता है, सिद्ध स्वपद तत्क्षण पाता है॥

बिन विवेक है क्रिया अधूरी, मोक्षमार्ग की इससे दूरी।
जबतक है मिथ्यात्व वासना, तबतक व्रत का नाम लेश ना॥
अतः नाथ मिथ्यात्व भगाऊँ, सोयी समकित शक्ति जगाऊँ।
तुव पथ का बनकर अनुगामी, बन जाऊँ मैं शिवपथ गामी॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वविदेहस्थ श्रीभुजंगप्रभजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछंद)

भेत्ता अष्ट कर्म भूभृत के श्री भुजंगप्रभ जिन तीर्थेश।
नेता मोक्षमार्ग के स्वामी श्री जिनवर सर्वज्ञ महेश॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री ईश्वर जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

मंदरमेरु अपरविदेह में सीतोदा दक्षिण तट श्रेष्ठ।
नगर सुसीमा जन्मभूमि है अति सुन्दर नगरों में ज्येष्ठ॥
नृप गलसेन सुमाता ज्वाला के नंदन ईश्वर जिनराज।
रवि लक्षण चरणों में शोभित त्रिभुवन तिलक शीर्ष महाराज॥
आह्वानन सुस्थापन सन्निधिकरण क्रिया करके हे नाथ।
जल फलादि वसु द्रव्य सुप्रासुक लेकर पूजूं चरण सुनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीईश्वरजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीईश्वरजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वपुष्करार्धमंदरमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीईश्वरजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(जोगीरासा)

सम्यक् दर्शन का पावन जल निज अंतर में लाऊँ।
मिथ्यात्वादिक सर्व कषायें नाशूँ शिवपद पाऊँ॥
ईश्वर प्रभु जगदीश्वर वन्दूँ सविनय शीष झुकाऊँ।
पंचम भाव पारिणामिक ध्या परमेश्वर पद पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन का चंदन ले भव आताप नशाऊँ।
क्रोध कषाय विनाश करूँ मैं स्वामी शिवपद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन अक्षत ले प्रभु अक्षय पद प्रगटाऊँ।
मान कषाय विनाश करूँ मैं स्वामी शिवपद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन सुमन सजाऊँ काम भाव विनशाऊँ।
माया नाशूँ ऋजुता लाऊँ स्वामी शिवपद पाऊँ॥
ईश्वर प्रभु जगदीश्वर वन्दूँ सविनय शीष झुकाऊँ।
पंचम भाव पारिणमिक ध्या परमेश्वर पद पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के चरु लाऊँ क्षुधा रोग विनशाऊँ।
लोभ कषाय विनाश करूँ मैं स्वामी शिवपद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन का दीपक ले मिथ्यामोह भगाऊँ।
पूर्णतया अज्ञान मिटाऊँ स्वामी शिवपद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन धूप सुगंधित लाऊँ कर्म नशाऊँ।
सर्व विभावी परिणति नाशूँ स्वामी शिवपद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के फल लाऊँ महा मोक्षफल पाऊँ।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़कर स्वामी शिवपद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन अष्ट अंगयुत अर्घ्य अपूर्व बनाऊँ।
स्वपद अनर्घ्य प्रगट कर मैं भी स्वामी शिव पद पाऊँ।। ईश्वर॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

निज ईश्वर का ध्यान कर हुए जिनेश्वर आप।
परमेश्वर प्रभु पद नमूँ नाशूँ भव संताप॥

(मोतियादाम)

दयानिधि ईश्वरनाथ प्रणाम, परंब्रह्मात्मा मंगलधाम।
सुसंस्कृत सुमुख सत्य विकलंक, गुणेश्वर ब्रह्मेश्वर निकलंक॥

महा शोकध्वज महसांधाम, महा महसांपति महा विराम।
महायोगीश्वर दम तीर्थेश, जितान्तक लोकेश्वर जितक्लेश ॥

सुनय समयज्ञ सत्य संधान, चतुर्मुख सत्य सत्य विज्ञान।
तुम्हीं सत्येश्वर सत्य जिनेश, तुम्हीं सर्वज्ञ जिनेन्द्र महेश ॥

जितेन्द्रिय कृतकृत्य लोकज्ञ, महा सम्पन्न महामर्मज्ञ।
तुम्हीं कर्मारि विनाशक नाथ, तुम्हीं शान्तारि सुश्रुत जगनाथ ॥

प्रभूतात्मा निर्लेप निरोग, मिला तव चरणों का संयोग।
सकल दुःख दूर हो गये देव, मिले दर्शन प्रभु के स्वयमेव ॥

भ्रमण भव पीर मिटा दो नाथ, रहूँ मैं सदा आपके साथ।
करूँ मैं विनय यही बहुबार, मुझे दे दो सम्यक्त्व अपार ॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ ईश्वरजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

आधि व्याधि पर की उपाधि तज निज समाधि में हुए सुलीन।
ईश्वर संज्ञा सार्थक करके त्रिभुवन ईश्वर हुए प्रवीण ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

कर लो जिनवर का गुणगान, आई सुखद घड़ी।
आई सफल घड़ी, देखो मंगल घड़ी ॥ करलो. ॥
वीतरागी का दर्शन-पूजन भव-भव को सुखकारी।
जिन प्रतिमा की प्यारी छवि लख मैं जाऊँ बलिहारी ॥ करलो. ॥
तीर्थंकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष का दाता।
जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता ॥ करलो. ॥
प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परणिाम नाश हो जाते।
धर्म ध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते ॥ करलो. ॥
सम्यग्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता।
रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता ॥ करलो. ॥
निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती।
निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती ॥ करलो. ॥

श्री नेमि जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

मंदरमेरु अपर विदेह सीतोदा सरिता उत्तर में।
नगर अयोध्या जन्मभूमि लख इन्द्रादिक पुलकित उर में ॥
मात सुसेना वीरसेन नृप के नन्दन पग वृष लक्षण।
नेमि जिनेश्वर के दर्शन कर नाचा धरती का कण-कण ॥
पूजन करने का विचार कर अष्ट द्रव्य लाया स्वामी।
जिन पूजन का सर्वोत्तम फल बन जाऊँ शिवपथ गामी ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीनेमिजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीनेमिजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीनेमिजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(अवतार)

ले भेद ज्ञान का नीर सम्यक् ज्ञानमयी।
त्रय व्याधि नाश पाऊँ पद निर्वाणमयी ॥
हे नेमि जिनेश्वर विहरमान स्वामी।
प्रभु धर्मधुरा साक्षात के नामी ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भेद ज्ञान की गंध सम्यक् ज्ञानमयी।
भवताप नाश पाऊँ पद निर्वाणमयी।। हे नेमि. ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत लूँ परम महान सम्यक् ज्ञानमयी।
पाऊँ अखंड अविकार पद निर्वाणमयी।। हे नेमि. ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

लाऊँ अनंत गुण पुष्प सम्यक् ज्ञानमयी।
हर काम वाण की परी लूँ पद काम जयी॥
हे नेमि जिनेश्वर देव विरहमान स्वामी।
प्रभु धर्मधुरा साक्षात त्रिभुवन के नामी॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य भाव लूँ शुद्ध सम्यक् ज्ञानमयी।
नाशूँ औपाधिक रोग क्षुधा विकारमयी।। हे नेमि.॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहादि विकारी भाव सब अज्ञानमयी।
हर पाऊँ केवल सूर्य सम्यक् ज्ञानमयी।। हे नेमि.॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धूप अनूप सम्यक् ज्ञानमयी।
वसु कर्म नष्ट कर नाथ होऊँ कर्म जयी।। हे नेमि.॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय फल अविकार अनुपम ध्यानमयी।
परिपूर्ण मोक्ष फल सार सौख्य महानमयी।। हे नेमि.॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय अर्घ्य अपूर्व शुद्ध प्रभाव मयी।
पाऊँ अनर्घ्य पद नाथ पूर्ण स्वभाव मयी।। हे नेमि.॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

नेमि जिनेश्वर की प्रभा परम अलौकिक भव्य।
लौकिक सुख नश्वर तेज पाया शिव सुख नव्य॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(लावनी)

हे नेमि जिनेश सुनो मेरी यह बिनती।
मेरी भी हो इकदिन सिद्धों में गिनती॥
उपदेश आपका सुनूँ हृदय में धारूँ।
मिथ्यात्व मोह को अभी पूर्ण निर्वारूँ॥
सम्यक् दर्शन पूर्वक संयम उर लाऊँ।
मुनि बनकर नाथ दिगंबर मुद्रा पाऊँ॥
निज के स्वरूप की शक्ति हृदय में जागे।
रागादि विकारी भाव सर्वथा भागे॥
होकर एकाग्र स्वध्यान सहज ही ध्याऊँ।
परभावों से हो दूर स्वयं को भाऊँ॥
ज्ञानावरणादिक चार घातिया नाशूँ।
अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्रकाशूँ॥
पावन पवित्र परमार्थ पंथ प्रभु पाऊँ।
परिपूर्ण पूर्णिमा परम ज्ञान की लाऊँ॥
सहजात्म शुद्ध सद्धर्म तत्व प्रगटाऊँ।
सिद्धत्व शक्ति जागृत कर शिवपद पाऊँ॥
हे नेमि नम्र भावों से तुम्हें नमन है।
सर्वज्ञ जिनेश्वर प्रभु त्रिकाल वन्दन है।
हे धर्म धुरा के धारी तुमको ध्याऊँ।
मिथ्यात्व मोह सम्पूर्ण अभी विघटाऊँ॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री नेमिजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछंद)

श्री नेमि प्रभु के चरणों में निज स्वरूप का ध्यान करूँ।
ले शुद्धोपयोग का सम्बल अनुभव रस का पान करूँ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री वीरसेन जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

विद्युन्माली मेरु विदेह पूर्व में सीता सरि उत्तर।
पुण्डरीकिणी नगर मनोहर पुष्करार्ध भूपर सुन्दर॥
पृथ्वीपाल नरेश सूर्या माँ के सुत जिनवर स्वामी।
वीरसेन प्रभु विद्यमान तीर्थंकर निजपुर विश्रामी॥
ऐरावत है चिन्ह चरण में अंतरीक्ष पद्मासन धर।
समवशरण में नाथ विराजे पूजूँ चरण कमल भय हर॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीवीरसेनजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपूर्वविदहेक्षेत्रे श्रीवीरसेनजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीवीरसेनजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(पद्धरि)

जल चरण चढ़ाऊँ हे जिनेन्द्र, जन्मादि रोग नाशो महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥

ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन मलयज अर्पित जिनेन्द्र, संसार ताप नाशो महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥

ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल तंदुल अर्पित जिनेन्द्र, अक्षय पद पाऊँ मैं महेन्द्र।
हें वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥

ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्प अग्र अर्पित जिनेन्द्र, दो महाशील शिवमय महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥

ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचिमय चरु अर्पित हैं जिनेन्द्र, चिर क्षुधा रोग मेटो महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥
ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ दीप क्षणिक नश्वर जिनेन्द्र, दो ज्ञानदीप हे ज्ञान केन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥
ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप चढ़ाऊँ हे जिनेन्द्र, हो शुक्लध्यान उत्तम महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥
ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय भष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल की चाह नहीं जिनेन्द्र, दो शुद्ध मोक्षफल हे महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥
ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भाव अर्घ्य घातक जिनेन्द्र, दो पद अनर्घ्य ज्ञायक महेन्द्र।
हे वीरसेन जिन विद्यमान, सम्यक् चारित्र करो प्रदान॥
ॐ ह्रीं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

अतुल वीर्य के हो धनी वीरसेन जगदीश।
अवक्तव्य शुद्धात्म का कथन किया अवनीश॥

(सारक)

हे वीरसेन स्वामी समकित प्रदान कर दो।
निज पर विवेक जागे उर भेदज्ञान भर दो॥
शुद्धात्मतत्व अनुपम है सर्वश्रेष्ठ न्यारा।
परमाणु मात्र पर का इसने कभी न धारा॥
अस्पर्श अरूपी है सर्वज्ञ स्वरूपी है।
निर्ग्रन्थ परम गुणमय रसरहित अरूपी है॥
है दूर विभावों से तद्रूप स्वभावों से।
निज आत्मद्रव्य निर्मल विरहित परभावों से॥

है अवक्तव्य अनुपम संस्थान नहीं कोई।
मार्गणा नहीं कोई गुणस्थान नहीं कोई॥
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् पूर्ण त्रिकाली है।
भूतार्थ ध्रौव्य शाश्वत अति महिमाशाली है॥
प्रभु शरण आपकी पा नाशूँ मिथ्यादर्शन।
चिन्मय अनंत गुणमय पाऊँ सम्यक् दर्शन॥
शुद्धात्म द्रव्य मेरा सर्वोत्कृष्ट पावन।
दो भेद-ज्ञान वैभव पाऊँ पद मन भावन॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ श्रीवीरसेनजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

वीरसेन को वन्दन करके जाना दृष्टि अगोचर रूप।
गुण अनन्त में विकसित होता शास्वत ध्रुव परमात्मस्वरूप॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

रोम रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा.....नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूँ प्रभूजी, लूँ ना जनम दुबारा॥ टेक॥
जिन मन्दिर में आकर जिनवर दर्शन पाया।
जिनवर सम निज शुद्धातम का अनुपम दर्शन पाया॥
जनम जनम तक ना भूलूँगा यह उपकार तुम्हारा॥ १॥
अर्हन्तों को जाना शुद्धातम पहिचाना।
द्रव्य और गुण पर्यायों से निज को जिन सम माना॥
सम्यक् दर्शन होता प्रभुवर मोह तिमिर क्षयकारा॥ २॥
देव-शास्त्र-गुरु मेरे हैं सच्चे हितकारी।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की महिमा जग में न्यारी॥
भेद ज्ञान बिन नहीं मिलेगा भव का कभी किनारा॥ ३॥

श्री महाभद्र जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

पूर्व विदेह मेरु विद्युन्माली सीतासरि दक्षिण तट।
विजयनगर में जन्मे स्वामी पाप पुण्य अघ किए विघट॥
देवराज पितु मात उमादे नंदन प्रभु को नमन करूँ।
महाभद्र प्रभु के गुण गाऊँ शशिलक्षण पग सुमन धरूँ॥
सप्तव्यसन से रहित बनूँ निर्दोष मूलगुण पालन कर।
सम्यक् श्रद्धा धारूँ उर में वसु प्रकार का मद हर कर॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीमहाभद्रजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीमहाभद्रजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीसंबंधिपूर्वविदेहक्षेत्रे श्रीमहाभद्रजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(जोगीरासा)

उत्तम जल प्रभु अग्र चढ़ाऊँ जन्म मरण विनशाऊँ।
राग रहित निर्मल जल लेकर रत्नत्रय निधि पाऊँ॥
महाभद्र प्रभु को नित ध्याऊँ नित नव मंगल गाऊँ।
भव दुःख क्षय हों, कर्म विलय हों जिनगुण संपति पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आतप के नाश हेतु मैं चंदन भेंट चढ़ाऊँ।
चिन्मय गन्धित चन्दन लेकर रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद की प्राप्तिं हेतु मैं अक्षत भेंट चढ़ाऊँ।
ध्रुव अखण्ड का आश्रय लेकर रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम व्यथा के नाश हेतु मैं पुष्प सुकोमल लाऊँ।
निज चैतन्य विलासी होकर रत्नत्रय निधि पाऊँ॥
महाभद्र प्रभु को नित ध्याऊँ नित नव मंगल गाऊँ।
भव दुःख क्षय हों, कर्म विलय हों जिनगुण संपति पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधारोग के नाश हेतु मैं प्रभु नैवेद्य चढ़ाऊँ।
अनुभव रस से तृप्त बनूँ मैं रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर से बचने को मैं उज्ज्वल दीप चढ़ाऊँ।
संशय विभ्रम मोह निवारूँ रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों के नाश हेतु मैं शुचिमय धूप चढ़ाऊँ।
क्षमा आदि दर्श धर्म धरूँ मैं रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय अष्ट कर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोक्षफल प्राप्ति हेतु मैं फल की भेंट चढ़ाऊँ।
अविनश्वर शिव फल पाने को रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य पाने को जिनपति वसु विधि अर्घ्य चढ़ाऊँ।
गुण अनन्त का अर्घ्य बनाऊँ रत्नत्रय निधि पाऊँ।। महाभद्र.॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्रजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

महाभद्र भद्रेश से पाऊँ भद्र प्रकाश।
निज चैतन्य विलास से हों वसु कर्म विनाश॥

(मानव)

प्रभु महाभद्र की वाणी अनुकंपा मय उर धारूँ।
सम्यक् दर्शन प्रगटाऊँ मिथ्याभ्रम पूर्ण निवारूँ॥

यह मोह दुष्ट ही मुझको भव दुःख देता आया है।
निज ज्ञान भानु का मैंने अब तक न उदय पाया है॥
ज्ञानी, वरणी ने मेरे ध्रुव ज्ञान भाव को रोका।
दर्शन आवरणी ने प्रभु, दर्शन स्वभाव को टोका॥
इस अंतराय ने बाधक बन विघ्न सदैव किए हैं।
अरि मोहनीय ने मिथ्या भ्रम के अंगार दिए हैं॥
इन चारों ने हिल मिल कर चारों गति भ्रमण कराया।
पश्चात् सहस्र दो सागर फिर से निगोद पहुँचाया॥
इनके चक्कर में पड़कर हे प्रभु बहु कष्ट उठाया।
शुभ अशुभ राग अपना कर भव भव में भ्रमण बढ़ाया॥
संयोग पुण्य का फिर पा आया मैं शरण तुम्हारी।
तारा अनेक भव्यों को अब प्रभु है मेरी बारी॥
मिथ्यात्वभाव को क्षय कर सम्यक्त्वभाव उपजाऊँ।
अविरति का भाव हटाऊँ संयम का भाव जगाऊँ॥
इन चार घाति कर्मों को निज अवलम्बन से नाशूँ।
कैवल्यज्ञान निधि पाऊँ दर्शन सुख वीर्य प्रकाशूँ॥
सर्वज्ञ वीतरागी पद प्रगटाऊँ अविरल शाश्वत्।
झलकें स्वज्ञान में युगपत गुण पर्यायें दर्पणवत॥
फिर गोत्र वेदनी आयु अरु नामकर्म विघटाऊँ।
चारों अघाति क्षय कर प्रभु सिद्धत्व पूर्ण प्रगटाऊँ॥
है यही प्रार्थना मेरी हो सफल साधना स्वामी।
आशीर्वाद दो तुम सम बन जाऊँ अंतर्यामी॥
जिनपूजन का फल पाऊँ जिनराज शरण को पाकर।
अब मोक्षमार्ग पर आऊँ अपने स्वभाव में आकर॥
जो मूल भूल है मेरी पर्यायदृष्टि दुःखदायी।
इसका विनाश कर पाऊँ मैं द्रव्यदृष्टि सुखदायी॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ श्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछन्द)

महाभद्र की महाकृपा से महामुक्ति पथ पर आऊँ।
महा शुद्ध चैतन्य महाप्रभु सम अविकल्प दशा पाऊँ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार ॥ टेक ॥
चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षण-भंगुर जगत में, निज आत्म तत्त्व ही सार।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥ १ ॥
हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का करता होय।
ऐसी मिथ्या बुद्धि से, भ्रमण-चतुर्गति होय।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥ २ ॥
लोचन-द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दुःखमय गति-चार में, ध्रुव-आत्मतत्त्व ही सार।
यातें नाशा दृष्टि विराजे जिनवर झलके शान्त अपार ॥ ३ ॥
अन्तर्मुख-मुद्रा अहो, आत्मतत्व दरसाय।
जिन-दर्शन कर निज दर्शन पा, सत-गुरु-वचन सुहाय।
यातें अन्तर्दृष्टि विराजें जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥ ४ ॥

श्री यशोधर जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

विद्युन्माली मेरु विदेह अपर में सीतोदा दक्षिण।
नगर सुसीमा जन्मे जिनवर चरणों में स्वस्तिक लक्षण॥
नृप अवभूत पिता माँ गंगा के सुपुत्र जिन तीर्थंकर।
देव यशोधर विद्यमान जिन समवशरण राजित मनहर॥
दिव्यध्वनि द्वारा भव्यों को मोक्षमार्ग दर्शाते प्रभु।
पूजन करके तुव पथ पर मैं भी आ जाऊँ जिनवर विभु॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीयशोधरजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीयशोधरजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीयशोधरजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(प्राचीन)

पर परिणति का नीर सुखाऊँ निज परिणति जल लाऊँ जी।
ज्ञानानंद स्वरूप प्रगट कर भव संताप हटाऊँ जी॥
नाथ यशोधर चरण पूजकर यश प्रकृति विनशाऊँ जी।
यश अपयश से दूर सदा जो निज स्वभाव को ध्याऊँ जी॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव परिणति का चंदन अंतर हृदय सजाऊँ जी।
आस्रव बंध मिटाने को अब निज घर में रम जाऊँ जी।। नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पर विभाव परिणति को क्षय कर अनुपम अक्षत लाऊँ जी।
निज स्वभाव परिणति का बल पा अक्षय पद प्रगटाऊँ जी।। नाथ.॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव परिणति के पुष्प अपूर्व अनंत सजाऊँ जी ।
ब्रह्मानंद स्वरूप प्रगट कर महाशील पद पाऊँ जी ॥
नाथ यशोधर चरण पूजकर यश प्रकृति विनशाऊँ जी ।
यश अपयश से दूर सदा जो निज स्वभाव को ध्याऊँ जी ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज स्वभाव परिणति नैवेद्य महान हृदय में लाऊँ जी ।
पर विभाव परिणति विनाश कर परम तृप्त बन जाऊँ जी ।। नाथ. ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज स्वभाव परिणति के दीपक भेद-ज्ञानमय लाऊँ जी ।
मोह क्षोभ विष को विनष्ट कर पूर्ण ज्ञान उपजाऊँ जी ।। नाथ. ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

परविभाव परिणति की धूप अभी सम्पूर्ण जलाऊँ जी ॥
शुक्ल ध्यान से कर्म नाश कर सिद्ध स्वपद प्रगटाऊँ जी ।। नाथ. ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय दुष्टाष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर विभाव फल कर्म चेतना अब परिपूर्ण मिटाऊँ जी ।
ज्ञान चेतना का संबल ले महामोक्ष फल पाऊँ जी ।। नाथ. ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अब विभाव परिणति का नहीं विकारी अर्घ्य बनाऊँ जी ।
रागादिक सारे विकास हर पद अनर्घ्य प्रगटाऊँ जी ।। नाथ. ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधराजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द का ध्यान धर पाया पद अर्हन्त ।
पुण्य-पाप क्षय कर हुए मुक्तिकन्त भगवन्त ॥

(वीरछंद)

नाथ यशोधर के चरणों में सादर शीष झुकाऊँ आज ।
ज्ञानांजन की एक शलाका निज नयनों में ऑजूं आज ॥

ज्ञानपटल मेरे खुल जाएँ यही विनय है हे जिनराज।
महामोह निद्रा उड़ जाए जागूँ मैं शिवसुख के काज॥
प्रभो ! दिव्यध्वनि सुनकर जाना सभी राग बंधन के धाम।
दुष्ट अष्ट कर्मों में सातामयी पुण्य का भी है नाम॥
इस अपूर्व वाणी कल्याणी से ही होगा निज कल्याण।
ध्यान ध्येय ध्याता विकल्प तज करूँ आत्मा का ही ध्यान॥
एकमात्र ध्रुवधाम ध्येय की धुन हो अंतर में साकार।
घाति अघाति कर्म वसु क्षयकर पाऊँ परमानंद अपार॥
जिन भावों से गोत्र तीर्थंकर बँधता है वे भी हेय।
एकमात्र शुद्धात्मतत्व ही उपादेय हो मेरा ध्येय॥
आगम द्वारा आत्मतत्व को जान युक्ति से करूँ विचार।
तथा स्वानुभव से निर्णय कर करूँ आत्मा का उद्धार॥
बहिरातमपन त्याग अन्तरात्मा होने का करूँ उपाय।
इस विधि परमात्मा पद पाऊँ पाऊँ सिद्ध स्वपद सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमविदेहक्षेत्रस्थ श्रीयशोधरजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछंद)

त्रिभुवन तिलक यशोधर स्वामी को वन्दन है अगणातीत।
परम शुद्ध ज्ञायक का आश्रय शिवपथ है केवली प्रणीत॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री अजितवीर्य पूजन

स्थापना

(ताटंक)

विद्युन्माली मेरु विदेह अपर दिशि सीतोदा उत्तर।
पुरी अयोध्या जन्मे स्वामी हर्षित हुए इन्द्र सुरनर॥
पिता सुबोधन माता कनका के सुत अजितवीर्य स्वामी।
कमलचिन्ह चरणों में शोभित समवशरण अति अभिरामी॥
तुम्हें मोह भी जीत न पाया इसीलिये हो अजित जिनेश।
पूजन करके निज को ध्याऊँ प्रगटाऊँ निज वीर्य विशेष॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीअजितवीर्यजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीअजितवीर्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रे श्रीअजितवीर्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(सोरठा)

लाऊँ प्रासुक नीर चरण चढ़ाऊँ आप के।
त्रिविध रोग की पीर नाशूँ शुद्ध स्वभाव से॥
अजितवीर्य जिनराज मोह शत्रु से हो अजित।
निजपद दो महाराज मैं भी जीतूँ मोह को॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन शीतल लाय चरण चढ़ाऊँ आप के।
भव आतप दुखदाय नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य.॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत तंदुल लाय निकट चढ़ाऊँ आपके।
पर-पद भवदुःखदाय नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य.॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगंध प्रसिद्ध अग्र चढ़ाऊँ आय के।
कामबाण के दंश नाशूँ शुद्ध स्वभाव से॥
अजितवीर्य जिनराज मोह शत्रु से हो अजित।
निजपद दो महाराज मैं भी तो जीतूँ मोह को॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पाऊँ चरु संतोष जीतूँ लोभ कषाय को।
क्षुधा रोग का दोष नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद-ज्ञान का दीप आप कृपा से प्राप्त हो।
मोह राग-रुष नीच नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

लाऊँ शुचिमय धूप धर्म स्वभावी नाथ अब।
अष्टकर्म दुखरूप नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष फल लाय चरण चढ़ाऊँ हर्ष से।
पाप पुण्य फल आज नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अपूर्व बनाय ज्ञातादृष्टा भावमय।
दुःखदायी भव राग नाशूँ शुद्ध स्वभाव से।। अजितवीर्य. ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

अजितवीर्य जिनराज ने राग द्वेष को जीत।
वीर्य अनन्त प्रगट किया अद्भुत वचनातीत॥

(पंचचामर)

नाथ अजितवीर्य की शरण पाऊँ सदा,
केवली कथित जिनधर्म पाऊँ सदा।
परम आनंदमयी सत्य शिव सुन्दर,
देव अरहंत सर्वज्ञ हे जिनेश्वरम्॥

सकल जग भ्रमण कर आज पाया तुम्हें,
मोह मिथ्यात्व हर आज ध्याया तुम्हें।
हो गया अटूट विश्वास पूर्ण बुद्ध हूँ,
सिद्ध के समान द्रव्यदृष्टि से मैं शुद्ध हूँ॥

द्रव्यकर्म भावकर्म से सदा विहीन हूँ,
रंच नोकर्म भी नहीं महा प्रवीण हूँ।
किन्तु कर्तृत्वबुद्धि से दुःखी हुआ सदा,
भोक्तृत्व बुद्धि से सुखी हुआ नहीं कदा॥

पाप को कुशील जान पाप छोड़ता रहा,
पुण्य को सुशील मान पुण्य जोड़ता रहा।
भूल गया पुण्य भी बंध का ही हेतु है,
मोह का ही अंश है मोह का ही केतु है॥

आज अभूतार्थ का आश्रय त्याग कर,
शरण भूतार्थ का पा गया विराग भर।
हे जिनेन्द्र ! आज परमार्थ तत्व मिल गया,
ज्ञान रवि किरण खिली मुक्ति यान मिल गया॥

ज्ञानदीप मालिका प्रकाशमयी मिल गई,
देखते ही आपको कली हृदय की खिल गई।
कर्मरज पूर्णतः शीघ्र धोऊँगा प्रभो,
पास आपके विराजमान होऊँगा विभो॥

नमन करूँ नमन करूँ विहरमान जिनवरम्,
साक्षात् विद्यमान नमो तीर्थंकरम्।
आज मैंने किया स्वच्छ मन मंदिरम्,
आइये पधारिये विराजिये जिनेश्वरम्॥

परम आनंदलीन परमसौख्य शिवकरम्,
शुद्ध अरहंत भगवंत अखिलेश्वरम्।
ज्ञान ज्ञायकस्वरूप पूर्ण ज्ञानेश्वरम्,
ध्रौव्य क्षेमंकरम् पूज्य विश्वेश्वरम्॥

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमपुष्करार्धविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपश्चिमविदेहक्षेत्रस्थ श्रीअजितवीर्य जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीरछंद)

मोह शत्रु को जीत अजित प्रभु बतलाया अध्यात्म रहस्य ।
जो श्रेयस् पद तुमने पाया मैं भी पाऊँ नाथ अवश्य ॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

समुच्चय जयमाला

(चान्द्रायण)

जिनपूजन से हो जाते सब पाप क्षय ।
पुण्य चरण धोते हैं आकर प्रति समय ॥
सम्यक् दर्शन होता सम्यक् ज्ञानमय ।
होता है सम्यक् चारित्र स्वध्यानमय ॥

रत्नत्रय का प्रोहण मिल जाता सहज ।
केवलज्ञान सूर्य भी खिल जाता सहज ॥
भव्य जीव पूजन कर शिवसुख पायेंगे ।
फिर न लौटकर भवअटवी में आयेंगे ॥

वीतराग सर्वज्ञ महेश कहायेंगे ।
तत्वबोधि दे सबको पार लगायेंगे ॥
जिन गुण गाने का अंतर में भाव है ।
शक्ति नहीं है फिर भी भाव अथाह है ॥

(तांटक)

विद्यमान विंशति तीर्थंकर शुभ विधान सम्पूर्ण हुआ ।
पूर्वोपार्जित पाप कर्म का बंध पूर्णतः चूर्ण हुआ ॥
सीमंधर अरहंत महा प्रभु, युगमंदर आनंद स्वरूप ।
बाहु जिनेश्वर मंगलकारी, श्रीसुबाहु जिन शुद्ध अनूप ॥

संयातक अनंत गुणधारी, नाथ स्वयंप्रभ सर्वज्ञ।
वीतराग ऋषभानन स्वामी, नाथ अनंतवीर्य आत्मज्ञ॥

श्री सूर्यप्रभ ज्ञानसूर्यपति, नाथ विशाल कीर्ति सर्वेश।
श्री बज्रधर त्रिभुवन के पति, चंद्रानन जिनवर चंद्रेश॥

चंद्रबाहु आनंद स्वरूपी श्री भुजंगप्रभ जिन प्रत्यक्ष।
ईश्वर प्रभु शाश्वत जगदीश्वर श्री नेमि प्रभु धर्माध्यक्ष॥

वीरसेन स्वामी विश्वेश्वर महाभद्र भव तारण यान।
नाथ यशोधर अघतम नाशक अजितवीर्य त्रैलोक्य प्रधान॥

पंचमेरु संबंधी पंच विदेहों के तीर्थंकर नाथ।
चार घातिया कर्म विनाशे हे सर्वज्ञ विदेहीनाथ॥

तीन गुप्ति कृतकारित अनुमोदन त्रय, संज्ञा त्यागूँ चार।
पंचेन्द्रिय से विरति प्राणिसंयम दस पालूँ सदा विचार॥

लूँ दशधर्म गुणित कर इनको निजस्वरूप की करूँ सँवार।
यही शील के भेद सहस अष्टादश लूँ आगम अनुसार॥

जिन वचनों में जो रमते उनका हो जाता मोह विनष्ट।
तदनुसार आचरण अगर हो तो न कभी होता भव कष्ट॥

मानूँ आज या कि कल मानूँ अथवा काल अनंतों बाद।
तीन लोक तीनों कालों में सम्यक् मार्ग यही अविवाद॥

पूर्ण विनय से सरल हृदय से गाई है मैंने जयमाल।
क्षय अल्पज्ञ दशा करके मैं प्राप्त करूँ प्रभु ज्ञान विशाल॥

शुद्ध हृदय से यही विनय है यही निवेदन है जिनराज।
चेतन का सौन्दर्य प्राप्त कर मैं भी पाऊँ निजपदराज॥

(दोहा)

भाव सहित वन्दन करूँ विद्यमान जिन बीस।
तीर्थंकर जिन शाश्वत विहरमान जगदीश॥

ॐ ह्रीं श्री जंबूद्वीप धातकीखंडपुष्करार्धसंबंधीसुदर्शनमेरुविजयमेरुमंदर मेरुविद्युन्माली मेरुसंबंधि पूर्वपश्चिमविदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्योमहार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

शुद्ध बुद्ध चैतन्य चन्द्र के चमत्कार से तुम हो पूर्ण।
परमानन्द स्वरूप प्रगट कर पाए गुण अनन्त सम्पूर्ण॥
विद्यमान विंशति तीर्थंकर जिन विधान कर हर्षाऊँ।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की शरण प्राप्त कर सुख पाऊँ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

शान्ति पाठ

(गीतिका)

हे जिनेश्वर बीस तीर्थंकर तुम्हें वन्दन करूँ।
परमशान्त सुसौम्य मुद्रा के सदा दर्शन करूँ॥
भवातप की आग से मैं जल रहा दिन रात प्रभु।
परम शान्ति प्रदान कर दो हरूँ भव सन्ताप विभु॥
महापुण्य संयोग से प्रभु आप की पाई शरण।
मुक्ति सुख के हेतु हो प्रभु आप ही तारण-तरण॥
भ्रमण चहुँगति नाश हित हो शुद्ध सम्यक्त्वाचरण।
सौख्य दाता शान्ति दाता शान्ति दो शिव सुख करण॥
सकल जग में शान्ति हो प्रभु नहीं कोई हो दुखी।
धर्म पथ पर चलें नित प्रति सभी प्राणी हो सुखी॥
दुःख क्षय हो कर्म क्षय हो हो समाधि मरण प्रभो।
प्राप्त सम्यक् बोधि हो चैतन्यराज शरण विभो॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

(वीर छन्द)

मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुन्दकुन्द ऋषि मंगल जैन धर्म सुखकर॥
सर्व मंगलों में मंगल है श्रेष्ठ सर्व कल्याण मयी।
श्री जिनधर्म प्रधान सभी में, जिन शासन हो सर्व जयी॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

क्षमापना

हुई ज्ञात अज्ञात भाव से भूलें सारी,
क्षमा करो प्रभु वीतराग जिनवर अविकारी।
आह्वानन सुस्थापन का प्रभु ज्ञान नहीं है,
सन्निधिकरण क्रिया या भी कुछ भान नहीं है॥
केवल विनय भक्ति से पूजा तुम्हें जिनेश्वर,
भूल चूक सब क्षमा करो प्रभु हे परमेश्वर।
पूजन का फल यही चाहता हूँ हे स्वामी,
ध्याकर निज चैतन्य देव होऊँ शिव गामी॥

भजन

निरखी-निरखी मनहर मूरति, तोरी हो जिनन्दा।
खोई-खोई आतम निज-निधि, पाई हो जिनन्दा॥ टेक॥
मोह दुःख का घर है मैंने, आज सरासर देखा है ...२
आतम-धन के आगे झूठा, जग का सारा लेखा है...२
मैं अपने में घुल-मिल जाऊँ, तो पाऊँ जिनन्दा॥ १॥
तू भवनाशी मैं भववासी, भवसागर से तरना है...२
शुद्ध-स्वरूपी तुझसा बनकर, शिवरमणी को वरना है...२
मैं अपने में ही रम जाऊँ, वर पाऊँ जिनन्दा॥२॥
नादानी में अबलों मैंने, पर को अपना माना है ...२
काया की माया में भूला, तुझको नहीं पहचाना है...२
अब भूलों पर रोता ये मन, मोरा हो जिनन्दा॥ ३॥